गगन

इसरो isro

क्रमांक 52

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र की गृह पत्रिका

अक्तूबर 2020 - मार्च 2021

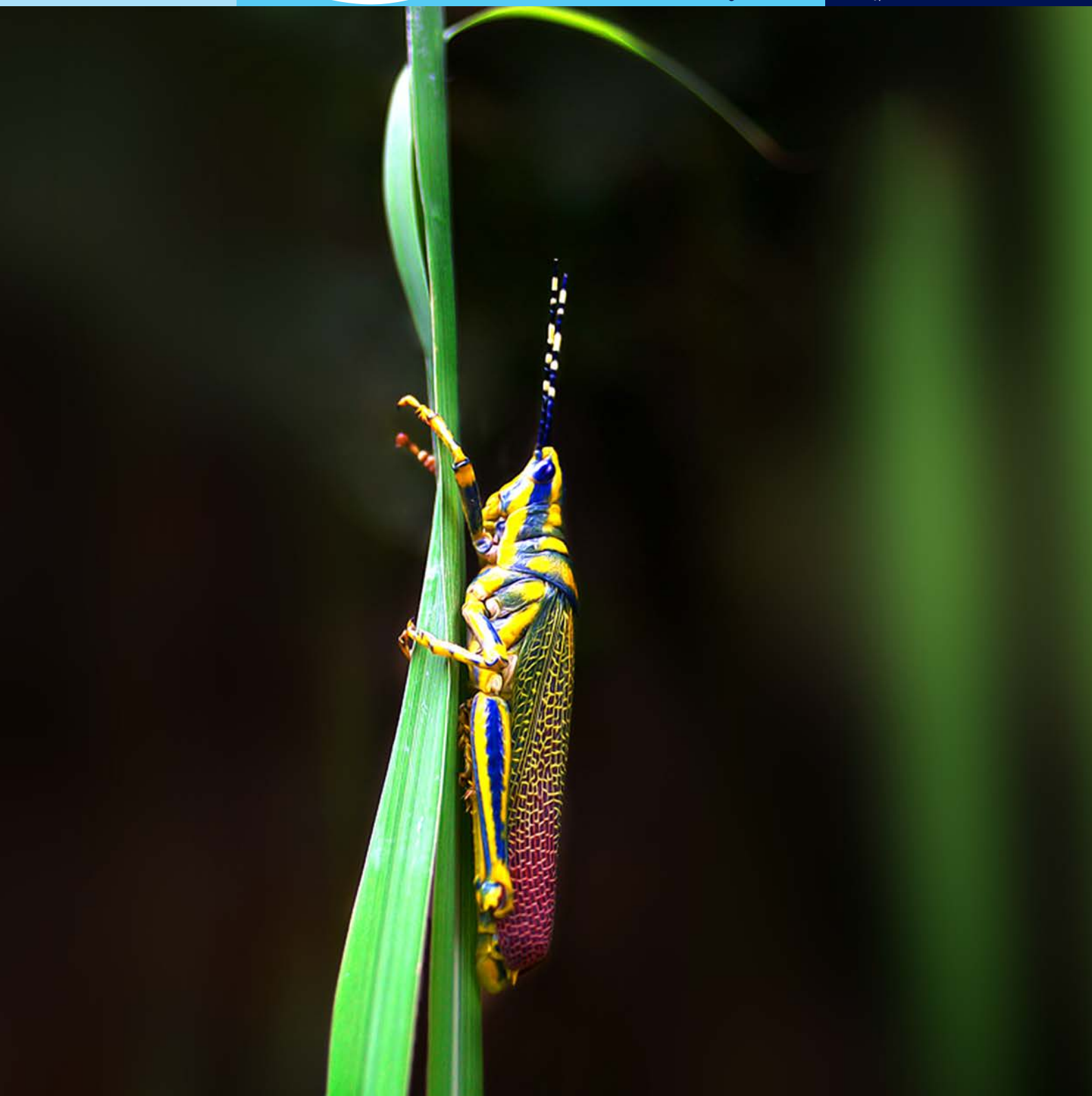

गगन में प्रकाशित लेखों के लिए पुरस्कार

गगन के अप्रैल-सितंबर, 2020 अंक में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को निम्नानुसार नकद-पुरस्कार प्रदान किए गए

हिंदी भाषी

1

विजेंद्र कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई, पीसीएम
मनोवृत्ति

2

निखत नाज़
श्री मो. मोइनुद्दीन हसन जी की पत्नी
औरत एवं पति

3

अंजली गोयल
श्री पवन कुमार मंगल जी की पत्नी
हमारे प्यारे बापू

हिंदीतर भाषी

1

एम जी सोम शेखरन नायर
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, वीएसएससी
कासे कहूँ एवं सादा जीवन-संतोषमय जीवन

2

अक्षया मुरलीधरन
डॉ. जी संतोष जी की भांजी
लॉकडाउन ने बहुत सिखाया नए-नए परिवर्तन लाया

3

श्रीनिवास पंडा
वैज्ञा/इंजी-एसई, क्यूजीसीपी
आपको वो बातें परेशानी में नहीं डालती जिसे आप नहीं जानते, बल्कि वो बातें या चीज़ें जिन्हें आप ज़रूरत से ज़्यादा जानते हैं।

पुरस्कार प्राप्त सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाइयां !!!

संपादकीय

वर्ष 2020 कोविड महामारी के कारण अनेक विषमताओं के बीच गुज़रा। पूरे विश्व में बड़ी संख्या में छोटे-बड़े, निर्धन-संपन्न इसके शिकार हुए। संपूर्ण मानव राशि ने इस भीषण आपदा का एकजुट होकर सामना किया तथा सामूहिक प्रयास से इसपर नियंत्रण पाने में एक हद तक सफल हुए हैं। कोरोना काल ने हमें बहुत कुछ सिखाया है। प्रकृति का आदर, समय का सदुपयोग, मानवीय संबंधों की एहमियत, लभ्य स्रोतों का अधिकतम उपयोग इत्यादि कई पहलुओं पर इसने हमें सोचने पर मजबूर किया है। घर में ही ज़्यादा समय व्यतीत करने की मजबूरी ने हमारे अंदर छुपे हुनर को बाहर लाने में सहायता पहुंचाई है। किसी ने अपनी सुरीली आवाज़ को परखा, किसी ने नृत्य और अभिनय में अपनी कुशलता का परिचय दिया और किसी ने कलम उठाकर अपनी सोच को वाणी दी। अतः सकारात्मक दृष्टि से देखें तो कोरोना ने हमें अपने अंदर झांककर अपनी गलतियों को सुधारने और नई पहल के साथ अपनी ऊर्जा के सदुपयोग का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया।

'गगन' का यह अंक नए लेखकों और नई रचनाओं से समृद्ध है। हमें इस बार पहले से कहीं अधिक लेख प्राप्त हुए। पृष्ठों की सीमा के चलते कुछ लेखों को अगले अंक के लिए रखा गया है। हमेशा की तरह इस बार भी आपको रचनाओं में विविधता नज़र आएगी। कथा, कविता, जीवन दर्शन, समाज सुधारक, खेल, फिल्म, साहित्य, राजभाषा, चुटकुले, हास्य-व्यंग्य इन सभी रंगों का पुट आपको इस अंक में दिखेगा। हमने इस अंक में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु कुछ सामग्री जोड़ी है। हमें उम्मीद है कि यह प्रयास इस प्रकाशन की उपादेयता को और बढ़ाएगी।

पत्रिका फिलहाल डिजिटल रूप में ही निकल रही है। स्थिति सामान्य होने पर कुछ प्रतियों के प्रकाशन हेतु प्रयास किया जाएगा। पाठकों के सुझाव पत्रिका के मूल्यवर्धन में हमेशा सहायक होते हैं। अतः हम इनका सदैव स्वागत करते हैं।

अभय कुमार

अभय कुमार

मुखपृष्ठ चित्र सौजन्य : श्री कुरियन के सी, अभिकल्पक

संरक्षक
श्री एस सोमनाथ

मुख्य संपादक
श्री अभय कुमार

संपादक मंडल
श्री पी के पांडे
डॉ. शशिभूषण तिवारी
श्री उल्लेख पांडे
श्रीमती लक्ष्मी प्रीति मणि
श्रीमती महेश्वरी अम्मा आर
श्री एम जी सोम शेखरन नायर

संपादन सहयोग
श्रीमती लक्ष्मी जी
श्रीमती राधम्माल देवराज
श्रीमती सी वी विनीता
श्रीमती चंदना राजेश
श्रीमती आतिरा एम जी
श्री कृष्ण मुरारी

प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार
लेखकों/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र
तिरुवनंतपुरम-695022
दूरभाष : 2564021, 4189, 4120
फैक्स : 0471 2564022

इस अंक में

पीएसएलवी-सी 51...	5
पीएसएलवी के लिए...	6
पीएसएलवी- सी 49...	7
भारत की प्रथम महिला शिक्षिका	8
अफसर का रिश्ता	9
सकारात्मक ज्योति	10
कंबल	11
क्या आप जानते हैं...	13
बिना विश्व कप के...	14
गुणगान मेरे प्यारे भारत का	18
आया होली का त्योहार	18
एम. एस. धोनी	19
क्यूँ है ?	19
आश्चर्यजनक किंतु सत्य	20
अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी	21
अनाथ बालक की चाह	22
बारिश	22
जीवन तृष्णा और सदाचार	23
अज्ञेय के काव्य में...	24
हमारे सुशांत	26
शुक्र ग्रह के बारे में रोचक तथ्य	27
यह सुंदर प्रकृति	28
पेड़ों का महत्व	28
ट्रिस्टन डा कुन्हा...	29
मेरी माँ	31
तेरे वास्ते ऐ मेरी ज़िंदगी	32
डर लगता है	32
विविध पुरस्कार	33
विविध हिंदी कार्यक्रम	34
शब्दार्थ-चिंतन	38
हिंदी का संकट	39
भाषाओं के भंवर में हिंदी की...	40
राजभाषा मंजरी	42
श्रुतिसम शब्दों के अर्थ-भेद	43
राजभाषा प्रश्नोत्तरी	44
अभिव्यक्ति सादृश्य	45
चुटकुले	46
आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा	47

पीएसएलवी-सी 51 का ब्राज़ील के लिए वाणिज्यिक प्रमोचन

इसरो के नए साल का शुभारंभ पीएसएलवी-सी 51 की शानदार सफलता से हुई थी और यह कई मायनों में खास था। 28 फरवरी, 2021 को, इसरो के वर्कहोर्स यान ने 637 कि. ग्रा. के ब्राज़ीलियन उपग्रह अमेज़ोनिया-1 और 18 अन्य यह प्रदायभारों को अपने निर्दिष्ट सूर्य तुल्यकाली ध्रुवीय कक्षा में प्रक्षेपित किया। यह अंतरिक्ष विभाग की नई वाणिज्यिक शाखा एनएसआइएल का पहला अभियान था। अमेज़ोनिया-1 ब्राजील द्वारा अभिकल्पित, एकीकृत, परीक्षित और प्रचालित पहला उपग्रह है।

पीएसएलवी-डीएल संरूपण में दो पीएसओएम-एक्सएल स्ट्रैप ऑन मोटर के साथ पीएसएलवी-सी 51 10:24 बजे (भा.मा.स.) श्रीहरिकोटा के प्रथम प्रमोचन मंच (एफएलपी) से उत्थापित हुआ। प्राथमिक उपग्रह अमेज़ोनिया-1 को 754.280 x 749.157 कि.मी. एसएसपीओ में 98.502° की नति में स्थापित किया गया। अन्य 18 पैंसेंजर प्रदायभारों को लगभग 511 कि.मी. की ऊँचाई वाले निम्न एसएसपीओ और 97.46° नति (एनएआइएनएस डाटा) में प्रक्षेपित किया गया। सभी उपग्रहों की कार्यकारिता की पुष्टि की गई।

पीएसएलवी-सी 51 का मुख्य आकर्षण था गोको विधा के माध्यम से उप समुच्चयों की प्राप्ति। इस वाहन की अन्य महत्वपूर्ण नई विशेषताएं हैं आइएस 2/3 एल में सिंगल पीस 116° धात्विक मधु छत्ताकार डेक प्लेट (जो एक सप्ताह का समय बचाती है), संशोधित आरएमएसए (संदूषण से बेहतर सुरक्षा के साथ और पॉसिटिव आर्म स्टेटस सिग्नल सुनिश्चित करने के लिए डीसी मोटर के वर्धित पावर चरण, एनएआइएनएस संसाधक में एससीएल विक्रम 1601-पीई संस्करण (उच्च निष्पादन वाला) और ईबी नाभीय अंतरापृष्ठ के लिए स्वदेशी 244 संपर्क नाभीय संबंधक (मौजूदा आयातित 215 संपर्क संबंधक को प्रतिस्थापित करते हुए)।

जब ग्राहक की अपनी मशीन को योग्यता के दौरान विफलता का सामना करना पड़ा तब उपयुक्त पृथक्करण प्रणाली प्रदान करते हुए एक विशिष्ट प्रकार का सामयिक समर्थन वीएसएससी द्वारा यूनिटीसैट (पीएसएलवी-सी 51 में 1U श्रेणी यात्री प्रदायभार) को प्रदान किया गया।

श्री एस आर बिजु पीएसएलवी-सी 51 / अमेज़ोनिया -1 मिशन के मिशन निदेशक थे, जबकि श्री एन एस श्रीकांत और श्री एम जे लाल ने क्रमशः यान निदेशक और सह यान निदेशक के रूप में कार्य किया।

आभार: पीएसएलवी परियोजना

पीएसएलवी के लिए स्वर्णिम विजयगाथा

17 दिसंबर, 2020 को जब पीएसएलवी-सी 50 ने निर्धारित उप भूतुल्यकाली अंतरण कक्षा (उप-जीटीओ) में इसरो के सीएमएस-01 का अंतःक्षेपण सटीकता से किया तो वह पीएसएलवी की 50वीं विजय गाथा बनी। यह इस वर्कहॉर्स का 52वां अभियान था। इन दशकों में हमने जो तकनीकी तथा प्रबंधात्मक कुशलता प्राप्त की है, वह भविष्य के विभिन्न पीएसएलवी अभियानों में काम आएगी। पीएसएलवी, पाइरो प्रणालियों का विकास, सम्मिश्र संरचनाओं का प्रेरण, अभियान की बहुमुखता, द्वैत प्रमोचन, बहु कक्षाएं, एंड-टु-एंड समर्पित वाणिज्यिक प्रमोचन सेवाओं का प्रस्ताव देना, कक्षीय मंच अवधारणा आदि जैसे कई तकनीकी तथा रणनीतिपरक पहलुओं का प्रदर्शन करने में हमारा यह प्रमोचन यान अग्रगण्य था।

पीएसएलवी-सी 50, सभी छह पीएसओएम-एक्सएल स्ट्रैप-ऑन मोटरों को कार्यान्वित करनेवाले पीएसएलवी-एक्सएल संरूपण में 15:41 बजे (भारतीय समय) श्रीहरिकोटा के द्वितीय प्रमोचन मंच (एसएलपी) से उत्थापित हुआ। 1425 कि.ग्रा. के सीएमएस-01 को 17.88º की नति के साथ 281.64 x 20,730.22 कि.मी. उप-जीटीओ में रखा गया। सीएमएस-01 का स्वास्थ्य अत्युत्तम पाया गया।

वर्तमान कोविड-19 की स्थिति में पीएसएलवी-सी 49 के प्रमोचन का सफल प्रबंधन करने में कार्यान्वित तीन मुख्य विशेषताओं को पीएसएलवी-सी 50 में भी बनाए रखा गया। वे थे-परोक्ष प्रमोचन नियंत्रण केंद्र (वीएलसीसी), मानक प्रचालन प्रक्रिया (एसओपी) तथा गतिविधियों के अंतिम चरण के लिए एसडीएससी में कम-से-कम कर्मीदल को ले जाना।

पीएसएलवी-सी 50/सीएमएस-01 अभियान के अभियान निदेशक श्री एस आर बिजु थे, जबकि श्री एन एस श्रीकांत और श्री एम जे लाल ने क्रमशः यान निदेशक एवं सह यान निदेशक के रूप में कार्य किया। श्री केवीएस भास्कर, यूआरएससी उपग्रह निदेशक थे।

आभार: पीएसएलवी परियोजना

पीएसएलवी-सी 49 ने ईओएस-01 को कक्षा में सटीकता से पहुंचाया

7 नवंबर, 2020 को पीएसएलवी-सी 49 ने इसरो के ईओएस-01 तथा नौ वाणिज्यिक नैनो उपग्रहों को निर्धारित कक्षा में सटीकता से पहुंचाया। यान का 51वां अभियान अंकित करते हुए श्रीहरिकोटा के प्रथम प्रमोचन मंच (एफएलपी) से 1511 बजे (भा.मा.स.) दो पीएसओएम-एक्सएल स्ट्रैप-ऑन मोटरों से सुसज्जित, पीएसएलवी-डीएल संरूपित वाहन का शानदार विक्षेपण हुआ। उत्थापन पहले 1502 बजे निर्धारित था, किंतु प्रमोचन साइट के ऊपर घने बादलों के छाने के कारण इसे नौ मिनटों के लिए विलंबित किया गया। 629 कि.ग्रा. ईओएस-01 तथा नौ वाणिज्यिक उपग्रहों को 36.91° की नति में 573.73 x 581.43 कि.मी. कक्षा में स्थापित किया गया। सभी उपग्रहों की सलामती की पुष्टि की गई।

यह वर्ष 2020 में इसरो का पहला प्रमोचन था जिसे मार्च 2020 में प्रमोचित किया जाना था, किंतु कोविड-19 महामारी के कारण इसके प्रमोचन में विलंब हुआ। इस कठिन समय के दौरान पीएसएलवी-सी 49 के प्रमोचन का प्रबंधन करने के लिए जिन प्रक्रियाओं को अनुकूलित किया गया, उनमें वर्चुअल लॉन्च कंट्रोल सेंटर (वीएलसीसी), जो वीएसएससी से वाहन की दूरस्थ जांच को सक्षम बनाता है, एसडीएससी में टीमों को सुरक्षित रूप से पहुंचाना और प्रमोचन यान एकीकरण के लिए मानक ऑपरेटिंग प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करना और अंतिम चरण के दौरान गतिविधियों के लिए अन्य केंद्रों से न्यूनतम कर्मियों (100 से कम व्यक्ति) को एसडीएससी ले जाना शामिल है।

प्रमोचन मंच पर लंबे समय तक पीएसएलवी-सी 49 को रखने पर उत्पन्न उलझनों को पूरी तरह सुलझा लिया गया। मूल्यांकन करते समय प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं पर विचार किया गया, जैसे मोटर केस के साथ ठोस प्रणोदक के अंतरापृष्ठ का सामर्थ्य, पीएस 2 चरण प्रवाह पैरामीटर, उन संवेदकों की पहचान, जिनका पुनःअंशांकन या प्रतिस्थापन किया जाना है, जिन जुड़नारो की आयु सीमा समाप्त हो रही है, उनकी पुनःयोग्यता निर्धारण, पायरो तत्वों का शेल्फ जीवन, एविओनिकी पैकेजों का स्वास्थ, प्रूफ-लोडिंग का दोहराव या बैंड प्रणाली का प्रतिस्थापन, कमानी में भंडारण हानि पर विचार करते हुए पीएस 3 पृथक्करण का मूल्यांकन, आदि। प्रत्येक पहलू में पर्याप्तता सुनिश्चित करने के लिए संतोषजनक कार्रवाई की गई।

श्री एस आर बिजु पीएसएलवी-सी 49/ ईओएस-01 मिशन के मिशन निदेशक थे, जबकि श्री एन एस श्रीकांत और श्री एम जे लाल ने क्रमशः वाहन निदेशक और सह वाहन निदेशक के रूप में कार्य किया। श्री आर. वी. नादगौडा, यूआरएससी उपग्रह निदेशक थे।

आभार: पीएसएलवी परियोजना

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका

अंकुश राज
वैज्ञा/इंजी. एससी, एमवीआइटी

19 वीं शताब्दी में स्त्रियों के अधिकारों, अशिक्षा, छुआछूत, सती प्रथा, बाल-विवाह, विधवा-विवाह जैसी कुरीतियों पर आवाज़ उठाने वाली देश की प्रथम महिला को क्या आप जानते हैं? वह कोई और नहीं महाराष्ट्र में जन्मी – सावित्री बाई फुले, जिन्होंने अपने पति दलित समाज सुधारक ज्योतिराव फुले से पढ़कर सामाजिक चेतना फैलाई, उन्होंने अंध-विश्वास और रूढियों की बेड़ियां तोड़ने के लिए लंबा संघर्ष किया।

सावित्री बाई फुले, भारत की पहली महिला शिक्षिका, कवयित्री, समाज-सेविका, जिनका लक्ष्य लड़कियों को शिक्षित करना रहा। सावित्री बाई फुले का जन्म 3 जनवरी, 1831 को महाराष्ट्र के एक दलित परिवार में हुआ, मात्र 9 वर्ष की आयु में उनका विवाह क्रांतिकारी ज्योतिराव फुले से हो गया उस समय ज्योतिराव फुले सिर्फ 13 साल के थे। पति क्रांतिकारी और समाजसेवी थे, तो सावित्री बाई ने भी अपना जीवन इसी में लगा दिया और दूसरों की सेवा करनी शुरू कर दी।

सावित्री बाई फुले विवाह के समय पूरी तरह अनपढ़ थी, तो वहीं उनके पति तीसरी कक्षा तक पढ़े थे। वह उस दौर में पढ़ने का सपना देख रही थीं, जब दलित के साथ बहुत भेदभाव होता था।

उस वक्त की एक घटना के अनुसार एक दिन सावित्री अंग्रेज़ी की किसी किताब के पन्ने पलट रही थी, तभी उनके पिताजी ने देख लिया वो आए और उन्होंने किताब हाथ से छीनकर घर के बाहर फेंक दिया। इसके पीछे की वजह उन्होंने बताई कि शिक्षा का हक केवल उच्च जाति के पुरुषों को ही है दलित व महिलाओं का शिक्षा ग्रहण करना पाप है। बस उस दिन उन्होंने किताब वापस लाकर प्रण लिया कि वह एक-न-एक दिन पढ़ना ज़रूर सीखेंगी।

समाज, उस वक्त लड़कियों को घर पर रहने के लिए मजबूर करता था, उस समाज के लिए सावित्री बाई फुले की मुहिम एक तमाचा थी। सावित्री बाई फुले ने अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर पढ़ना शुरू किया और आगे चलकर लड़कियों को भी पढ़ाना शुरू कर दिया।

वर्ष 1848 की बात है, उस समय सावित्री बाई फुले स्कूल में पढ़ाने के लिए जाती थी। तब सावित्री बाई फुले दो साड़ियों के साथ स्कूल जाया करती थी। एक साड़ी पहनकर और एक साड़ी अपने झोले में साथ रखकर जाती थी, क्योंकि रास्ते में लोग उन पर कीचड़ व गोबर आदि फेंकते थे। उनका मानना था कि दलित व शूद्र को पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार नहीं है। जिसकी वजह से उन पर कीचड़ व गोबर फेंका जाता था और इस दुराचार के बाद सावित्री बाई फुले अपने झोले से दूसरी साड़ी निकालकर पहनती और फिर पढ़ाना शुरू करती थी। ये सिलसिला चलता रहा लेकिन बाद में उन्होंने खुद का स्कूल प्रारंभ किया, जिसका उद्देश्य दलित बच्चों को शिक्षित करना था।

सावित्री बाई फुले ने 3 जनवरी, 1848 को अपने जन्मदिन पर अलग-अलग जातियों की 9 छात्रों को एकत्रित किया और स्कूल की शुरुआत कर दी। ये मुहिम सफल हुई और अगले एक साल के अंदर अलग-अलग स्थान पर सावित्री बाई फुले के पांच स्कूल खुल गए।

सावित्री बाई फुले ने छुआछूत, सती-प्रथा, बाल व विधवा-विवाह निषेध के खिलाफ पति के साथ काम किया। सावित्री ने आत्महत्या का प्रयास करनेवाली विधवा ब्राह्मण महिला काशीबाई का अपने घर प्रसव करवाकर उसके बच्चे यशवंत राव को अपने दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया। दत्तक पुत्र यशवंत राव का पालन-पोषण कर उन्हें डॉक्टर बनाया।

24 सितंबर, 1873 को सावित्री बाई फुले व ज्योतिराव फुले द्वारा सत्यशोधक समाज की स्थापना की गई, जिसके अंतर्गत उन्होंने विधवा-विवाह की परंपरा की नींव रखी। उन्होंने 25 दिसंबर, 1873 को पहला विधवा पुनर्विवाह कराया। वर्ष 1890 में बीमारी से पीड़ित होने के कारण ज्योतिराव की मृत्यु हो गई। ज्योतिराव फुले के निधन के बाद सत्यशोधक समाज की ज़िम्मेदारी सावित्री बाई फुले पर आ गई, उन्होंने पूर्ण निष्ठा के साथ उसका संचालन किया। उसके बाद 10 मार्च, 1897 को को प्लेग के मरीज़ों की देखभाल करने के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

सावित्री बाई फुले का संपूर्ण जीवन समाज के वंचित तबके, खासकर महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए संघर्ष में बीता। सावित्री बाई फुले इस देश की पहली महिला शिक्षिका और कवयित्री होने के साथ-साथ सती-प्रथा, बाल व विधवा विवाह (पुनर्विवाह), छुआछूत के खिलाफ लड़ने वाली प्रथम महिला थी, जिन्होंने दलित वर्ग की महिला के उत्थान के लिए संघर्ष किया।

सावित्री बाई फुले की एक प्रसिद्ध पुरानी कविता का हिंदी में अनुवाद इस प्रकार है-

जाओ जाकर पढ़ो-लिखो, बनो आत्मनिर्भर,
बनो मेहनती काम करो और ज्ञान इकट्ठा करो,

ज्ञान के बिना सब खो जाता है,
ज्ञान के बिना हम जानवर बन जाते हैं,

इसलिए खाली न बैठो, जाओ जाकर शिक्षा लो

दलितों और तिरस्कृतों के दुखों का अंत करो,
तुम्हारे पास सीखने का सुनहरा मौका है।

इसलिए सीखो और जाति के बंधन तोड़ दो।

●●●

अफसर का रिश्ता

दीपक श्रीवास्तवा
वैज्ञा/इंजी-एसडी, ईएसडी/पीसीएम

वो बोल पड़े बड़ी शान से। लड़का हमारा अफसर है।
कुछ लेन-देन की बात करें। कुछ हम घटें कुछ आप बढ़ें।।

मैं बैठी सब कुछ सुन रही। यह कैसी सौदेबाज़ी है।।

नहीं करनी शादी मुझको। मन सौदे से नहीं राज़ी है।।

अफसर ने देखा मेरी ओर। नज़रों से माफी मांग ली।।
इनसे ही करनी शादी मुझको। मन में है मैंने ठान ली।।

मां बोली अफसर की । चुप कर तू नादान है ।।
लड़के की शादी कर रहे हैं। दहेज में ही तो शान है।।

बोल पड़ा अफसर बेटा। कि दहेज मेरा वो लड़की है।।
सोने, चांदी, रुपए का मोल है क्या? अगर वो मेरी जीवनसंगिनी है।।

सम्मान, विश्वास और प्रेम ही तो। हर रिश्ते की आस है।।
उस क्षण राम मान लिया उनको। और बाकी सब इतिहास है।।

सकारात्मक ज्योति

हर जीवन एक संघर्ष है, सुख और दुख का समुद्र है।
विजय उसको प्राप्त होती,जिसने सकारात्मकता का साथ दिया।
सोच है बड़ी शक्तिशाली, इन्सान को खड़ाकर या गिरा सकती।

सकारात्मक सोच का दीपक, अंधकार में रोशनी फैलाता।
दुख में सुख की आशा करना, कष्ट में जीत की किरण जलाना,
मुमकिन करता सकारात्मकता।

हर विचार एक शस्त्र है, स्वयं या दुश्मन को नष्ट करने में सक्षम।
नकारात्मकता हमें शोक में डुबाता, मन व शरीर को हानि पहुँचाता।
सकारात्मकता हमें लड़ना सिखाता, दृढ़ता से मुकाबला कराता।

सोच एक ऐसा बीज है, मन-रूपी वृक्ष को जन्म देता।
नकारात्मक सोच कांटे उगाते, सकारात्मक सोच फूल उगाते।
ज़िंदगी के जंगल में, यह खिलते फूल मुस्कुराते।

और जीवन की नैया, आसानी से पार कराते।
कांटे तो केवल चुभते, विकास की गति धीमी करते।
विचार एक चश्मे की तरह, दुनिया को अपने रंग में दिखाता।

सोच यदि, नकारात्मक हो तो बेबसी दर्शाता,
सकारात्मक हो तो विश्वास झलकाता।
छोड़ दे नकारात्मक सोच, और मत बन उसका शिकार।
सकारात्मकता को अपनाओ, और आगे बढ़ते जाओ।

अक्षया मुरलीधरन
डॉ. जी. संतोष जी की भांजी

कंबल

करुणा पांडे
ड्राफ्ट्समैन-सीII, एचटीडीजी

इस बार ठंड कहर बरपा रही थी। शहर की एक मलिन बस्ती में बुज़ुर्ग घनश्याम इसी ठंड से जूझ रहे थे। पास ही लेटी पत्नी श्यामा के दांत किटकिटाने की आवाज़ गूंज रही थी जबकि उन्होंने एक फटी पुरानी रजाई, एक छलनी शॉल और उस पर मोटे कपड़ों को जोड़कर पिछले साल की सिली हुई ओढ़नी डाल रखी थी। तीनों मिलकर भी कायदे से आधी ठंड से भी नहीं बचा पा रहे थे।

खोलीनुमा घर में सुराखों को पन्नियों से ठूंसकर बंद करने का भरसक प्रयास किया गया था। पर सुई बराबर जगह से भी हवा तीर की तरह पार करती। अंगीठी में अंगार जल रहा था, पर ज़्यादा धुंआ भर जाए और श्यामा खांस बैठे इस ड़र से अंगार बाहर रख दिया।

उनका स्वेटर पुराना हो चुका है। उस पर एक कंबल डाला गया है जो पिछले साल चुनाव के मौके पर किसी पार्टी का कार्यकर्ता दे गया था। दूसरी पार्टी वाला नहीं आया वरना दोनों पति-पत्नी के पास अपना-अपना कंबल होता।

वैसे घनश्याम जी किसी नेता की दी हुई भीख पर जीने वाले नहीं थे। वे बड़े ही स्वाभिमान से 30 साल शिक्षक की नौकरी करते रहे लेकिन अपनों ने उन्हें खूब छला। बाल-बच्चे हुए नहीं, सो कभी भविष्य के लिए जोड़ा नहीं। होश तो तब आया जब स्कूल मालिक के बेटे ने उनकी जगह एक खूबसूरत शिक्षिका को नियुक्त कर दिया। उस दिन उन्हें गलती का एहसास हुआ। सोचने लगे अपना न सही पाला हुआ ही अगर बेटा-बेटी होता तो बुढ़ापे का सहारा बनता। ख़ैर इसके बाद कई स्कूलों के चक्कर लगाए, हर जगह एक ही जवाब मिलता अब क्या सारी उम्र पढ़ाओगे आप? रिटायरमेंट की उम्र में भी काम करोगे तो बेरोज़गार युवा क्या झक मारेंगे? हाँ अगर शौक़िया पढ़ाना चाहते हो तो बिना वेतन के पढ़ाओ।

घनश्याम जी ने कभी किसी के सामने दुखड़ा नहीं रोया था तो इन लोगों को क्या आपबीती सुनाते। कहीं लिखा-पढ़ी का काम मिला भी लेकिन इस उम्र में दो चार गलतियों की वजह से काम जाता रहा। इस तरह से उनके काम करने की इच्छा शक्ति जाती रही।

तन-मन से वे पूरी तरह खाली हो गए थे। बीमारियां तो घेरने के लिए खड़ी ही थी, ऐसी असहाय परिस्थितियों में श्यामा ने बड़ी हिम्मत दिखाई। भागदौड़ करके वृद्धों को सहारा

देनेवाली दो-चार संस्थाओं में नाम लिखवा दिया। श्यामा ने कोशिश की कि कुछ घरों का काम ले ले, पर घनश्याम जी को यह कतई मंज़ूर नहीं था। एक दिन उन्होंने गुस्से में कह दिया कि किसी घर में नौकरानी बनी तो प्राण त्याग दूँगा। इस डर से श्यामा ने यह विचार त्याग दिया। ख़ैर रूखी-सूखी खाकर दिन कट रहे थे। दोनों पूरी तरह से आश्रित हो चुके थे, पिछले साल हुआ यों कि चुनाव के चलते कार्यकर्ता घर-घर 'मांगते-बांटते' फिर रहे थे। ठंड भी कड़ाके की पड़ रही थी और घनश्याम जी बीमार थे ही। एक कार्यकता बेहद सर्द रात में इनकी ठिठुरन का फायदा उठाने आया। भेंट में कंबल।

घनश्याम जी भड़क गए – जाओ यहाँ से, नहीं चाहिए तुम्हारी रिश्वत, तुम्हारा कंबल। नहीं देंगे हम तुमको वोट। श्यामा चिढ़ गई। पर कुछ न बोल पाई। श्यामा पति की भावनाओं को समझती थी। एक पल को उसे भी लगा कि इन तुच्छ लोगों से क्या भीख लें। जीवन भर जब स्वाभिमान से जिए तो क्या इस समय में... अब? तभी ठंडी हवा के एक झोंके से श्यामा सिहर उठी, और खुद को धताते हुए बोली – क्या बकवास बात सोच रही है श्यामा।

ये हमें क्या भीख देंगे। हमारे पसीने की कमाई पर ही तो मौज करते हैं। आज घर के आगे दिख रहे हैं। फिर कभी पानी को भी ना पूछेंगे। थोड़ा असमजंस में पड़ गई वो... दरअसल श्यामा को लालच नहीं था। पर जिस घनश्याम की ऐसी हालत देख पत्थर भी पसीज जाए तो श्यामा क्यों न पिघले, वो तो उनकी पत्नी है। उसने सोच लिया कि पति की सेवा के लिए हर उसूलों को ताक पर भी रखा जा सकता है। सब कुछ भूलकर श्यामा ने उस कार्यकर्ता को बाहर खड़ा रहने का इशारा किया।

फिर पति से झूठ-मूठ रूठते हुए बोली, आप तो ठंड सह जाओगे जी, मुझ बूढ़ी का तो ख़्याल रखो। ठंड देखते हो कैसी पड़ रही है? मुझसे अब नहीं सही जाती यहाँ नस-नस चमक उठती है। खाया-पीया सबकुछ मुँह को आता है। खून तो वैसे भी नहीं है शरीर में और जो है वो इस ठंड ने जमा दिया। अब तो लगता है कि आज नहीं तो कल यह ठंड मुझे निगल जाएगी, कहते-कहते हांफने लगी वो। फिर थोड़ा रुककर बोली, आप कहें तो इसके कंबल के सहारे ही ठंड काट लूंगी, जिंदा रहूँगी। स्वर करुण हो चुका था और गुहार इतनी मार्मिक थी कि वो न नहीं कह पाए।

पत्नी के मुख से यह सब सुनकर घनश्याम जी की आँखें छलक पड़ी। रुंधे गले से बोले, जा ले आ। पर मैं न ओढ़ूंगा, सुन ले...

श्यामा अनसुना करते हुए बाहर दौड़ गई और बोली, ला भैया, दो कंबल दे दे। भैया बोला अम्मा कंबल अभी एक ही बचा है। कल दूसरा ले लेना। भैया का 'कल' नहीं आया।

श्यामा को एक कंबल से ही संतोष करना पड़ा। फिर भी वो खुश थी। उस रात नहीं पर अगली रात खुद का कसम डालते हुए उसने वो कंबल घनश्याम जी को ओढा दिया। घनश्यामजी कसम कैसे तोड़ सकते थे। वो कंबल उन्हें एक साल के लिए बचा गया। पति राहत में थे तो श्यामा भी जैसे-तैसे ठंड सह गई।

इस साल भी किसी दूसरी सभा के चुनाव थे। वही चुनावी आलम। श्यामा भी खुश है। वो मन-ही-मन सोच बुने जा रही है। आज नेता जब चुनाव प्रचार पर निकला तो श्यामा सड़क पर खड़ी हो गई। नेता श्यामा के पैर छूने आगे बढ़ा तो श्यामा मुंह बनाते हुए बोली, रहने दे रे बेटा, क्यों मज़ाक करता है। जब तक वोट डालने की तारीख आएगी तब तक तो हम इस ठंड से गुज़र गए समझो। इस दुष्ट ठंड के मारे हमें कल का भरोसा नहीं है। क्या करें। हमारे पास तो कंबल तक नहीं। क्या काम का ऐसा जीवन और ऐसा नेता।

श्यामा का गंतव्य अनुभवी नेता समझ गया। उसने कार्यकर्ता की तरफ देखा, आँखों ही आँखों में इशारा हो गया। श्यामा ने भी वस्तुस्थिति समझ ली और तुरंत उसके सिर पर हाथ फेरकर बोली, फिर भी हमारा वोट तो तेरे ही साथ है। यक़ीन मानिए उलाहना काम कर गई। इस साल ये रात बड़ी गर्म थी।

श्यामा और घनश्याम जी दोनों अपने नए मोटे गर्म कंबल में मज़े से सो रहे थे। श्यामा को थोड़ा दुःख ज़रूर था जो उसने घनश्यामजी से झूठ बोला कि एक संस्था वाले दो नए कंबल दे गए हैं। लेकिन पति को आराम में देख श्यामा अपनी चतुराई पर बड़ी खुश हो रही थी उसे यकीन था कि उसके इस झूठ के लिए भगवान भी उसे माफ कर देंगे।

●●●

क्या आप जानते हैं...

स्वभक्षी रॉकेट: एक अभिनव प्रौद्योगिकी

पवन कुमार मंगल
वैज्ञा/इंजी - एसई, सीएसओजी

वर्तमान में रॉकेट या प्रमोचन यान के साथ सबसे बड़ी समस्या उसके प्रणोदक भंडारण टंकी आवरण संरचना का ज़्यादा भार है। साथ ही, रॉकेट के प्रणोदक भंडारण टंकी का वज़न कभी-कभी पेलोड से भी अधिक होता है। यह रॉकेट की पेलोड क्षमता को कम करने के साथ-साथ अंतरिक्ष में कचरे को भी बढ़ावा देता है, क्योंकि संग्रहण टंकी प्रणोदक के समाप्त होने या अपना काम पूरा करने के बाद रॉकेट से पृथक होकर अंतरिक्ष में खुला छोड़ दिया जाता है, जो कई सालों तक किसी अंतरिक्ष कक्षा में घूमता रहता है तथा समय के साथ वायुमंडल में प्रवेश कर नष्ट हो जाता है।

स्वभक्षी रॉकेट (Self-eating Rocket) आरोहण फेज़ में स्वपोषी इंजन के द्वारा अपनी स्वयं की संरचना का उपभोग करता रहता है। इससे रॉकेट की पेलोड या कार्गो क्षमता बढ़ायी जा सकती है तथा साथ ही बहुत ही कम कचरा अंतरिक्ष कक्षा में छूटता है। स्वभक्षी रॉकेट की आधारभूत संकल्पना में विभेदित ईंधन एवं ऑक्सीकारक छड़ों को वाष्पीकरण इकाई में अलग-अलग विनियमित बल के साथ धकेला जाता है, जहाँ पर ये प्रणोदक गैसों में परिवर्तित होकर दाह कक्ष (Combustion Chamber) में प्रवेश करती है। यह वाष्पीकरण इकाई दाह द्वारा ऊष्मित होती रहती है। उपरोधी (Throttle) समायोजन को ईंधन छड़ पर बल को परिवर्तित कर वाष्पीकरण इकाई में प्रवेश गति का विनिमयन कर अनुकूल किया जाता है, साथ ही यह प्रणोदक भरण दर (Feed Rate) को भी प्रभावित करती है।

सामान्यतया प्रणोदक एक ठोस ईंधन छड़ के रूप में होता है, जिसका बाहरी आवरण प्लास्टिक जैसी पॉलिथीन पदार्थ का होता है तथा मध्य में ईंधन या ऑक्सीकारक होता है। जैसी ही यह छड़ गर्म इंजन में प्रवेश करते हैं, ये वाष्पीकृत होकर दाह/प्रज्वलन कक्ष में प्रवाहित होती है तथा नोदन को उत्पन्न करती है।

प्रणोदक छड़ें रॉकेट की काया संरचना को बनाती है तथा जैसे-जैसे रॉकेट ऊपर जाता है, इंजन इसकी संरचना को आधार से अग्र भाग तक क्षय/उपभोग करती जाती है। रॉकेट संरचना स्वयं ही क्षय होती जाती है, जिससे अत्यधिक आवरण संरचना वज़न की आवश्यकता की समस्या नहीं होती है तथा इससे अंतरिक्ष कचरा भी काफ़ी कम होता है।

अभी यह अभिनव प्रौद्योगिकी परीक्षण अवस्था में है तथा रॉकेट ठोस प्रणोदन के क्षेत्र में काफी प्रगति कर चुकी है। भविष्य में यह प्रौद्योगिकी अधिक रॉकेट भार क्षमता के लिए उपयोगी साबित होगी।

संदर्भ सूची :

1. इसरो हेडक्वार्टर्स (डीटीडीआई) इंट्रानेट वेबसाइट
2. विभिन्न तकनीकी समाचार वेबसाइट

●●●

बिना विश्व कप के...

राजेश एन
वैज्ञा/इंजी-एसडी, एएसओई

फुटबॉल दुनिया का सबसे लोकप्रिय खेल है। दुनिया के हर कोने में इसका अपना प्रभाव है, जहां मानव बसा है। दुनिया में एक भी ऐसा इंसान नहीं होगा जिसने अपने पैर से गेंद को किक नहीं मारी हो। मैं एक कट्टर फुटबॉल प्रशंसक हूँ और मैंने पिछले 30 वर्षों में कई राष्ट्रीय टीमों और क्लबों को सराहा है। लेकिन, एक अनूठी राष्ट्रीय टीम थी,जिसने कई मौकों पर अपनी प्रतिभा दिखाई। वे ज़्यादा अंतर्राष्ट्रीय सफलता हासिल नहीं कर सके। मुझे उस टीम के बारे में कुछ लिखना चाहता हूँ।

मुट्ठी भर महान खिलाड़ी...।, सबसे सफल फुटबॉल अकादमियां...।, शानदार फुटबॉल क्लब ..... यह कहानी डच फुटबॉल (नीदरलैंड की फुटबॉल, जिसे हॉलैंड और ओरेंज टीम भी कहा जाता है) के बारे में है, जो फीफा विश्व कप जीतने में सक्षम नहीं हो सका, फुटबॉल प्रतिभाओं और बुनियादी ढांचे के साथ धन्य होने के बावजूद। डच ने टूर्नामेंट जीते बिना सबसे अधिक विश्व कप फाइनल खेलने का रिकॉर्ड बनाया। वे वर्ष 1974 ,1978 और वर्ष 2010 के विश्व कप में दूसरे स्थान पर रहे, क्रमशः पश्चिम जर्मनी, अर्जेंटीना और स्पेन से हार गए।

अजाक्स एम्स्टर्डम (राजधानी शहर, एम्स्टर्डम से), पीएसवी आइंधोवेन (आइंधोवेन शहर से और फिलिप्स कंपनी के स्वामित्व वाले) और फेयेनोर्ड (रोटरडम शहर से) जैसे महान फुटबॉल क्लबों के युवा अकादमियों ने बेजोड़ प्रतिभावाले के खिलाड़ियों को तैयार किया था।

इन क्लबों की अकादमियों से यूरोपीय और विश्व मंच में उभरे खिलाड़ियों की संख्या इंग्लैंड, स्पेन, जर्मनी, इटली और फ्रांस के वर्तमान सूपर क्लबों की तुलना में बहुत अधिक थी।

उनमें से, वर्ष 1970 के दशक में, जोहान क्रूफ़, जो "टोटल फुटबॉल" के निर्माता हैं,और जोहान नेकेंस,जॉनी रेप,एरी हैन,राउड क्रोल,विम जंसेन,जान जोंगब्लोयड, विम सुर्बियर और रॉब रेंसनब्रिंक, जिन्होंने जोहान क्रूफ़ का समर्थन किया है; वर्ष 1980 के दशक के अंत में मार्को वैन बास्टेन, राउड गुलिथ और फ्रैंक रिज़कॉर्ड तिकड़ी, जिन्होंने डच टीम और इतालवी क्लब, एसी मिलान को अभूतपूर्व सफलता प्रदान की; डेनिस बर्गकैम्प, मार्क ओवरमार, फिलिप कोकु, एडगर डेविड्स,

FIFA WORLD CUP
Qatar2022

वर्ष 2022 विश्व कप प्रतीक चिह्न

लुसैल स्टेडियम

फ्रैंक डी बोअर और रोनाल्ड डी बोअर (जुड़वां भाई), पैट्रिक क्लुईवर्ट, एडविन वैन डेर सर, माइकल रेइज़र और क्लेरेड सीडॉर्फ 1990 के दशक में; 2000 के दशक की शुरुआत में मैनचेस्टर यूनाइटेड के लड़के रूड वान निस्टेलरॉय, उसके बाद रॉबिन वैन पारसी, अर्जेन रॉबेन और वेस्ले स्नेइडर, तथा वर्तमान में बार्सिलोना के मिडफील्डर फ्रैंके डे जोंग और लिवरपूल के लिए खेलने वाले वर्तमान डच कप्तान विर्जिल वैन डेजक का विशेष उल्लेख किए जाने की ज़रूरत है।

टोटल फुटबॉल, फुटबॉल के एक प्रभावशाली सामरिक सिद्धांत को दिया गया लेबल है जिसमें कोई भी आउटफील्ड खिलाड़ी टीम में किसी अन्य खिलाड़ी की भूमिका को संभाल सकता है। यह शैली वर्ष 1965 से 1973 तक अजाक्स द्वारा अपनाई गई थी और आगे वर्ष 1974 के फीफा विश्व कप में नीदरलैंड नेशनल फुटबॉल टीम द्वारा उपयोग किया गया था। इसका आविष्कार रिनस मिशेल्स ने किया था, जो उस समय अजाक्स और नीदरलैंड की राष्ट्रीय टीम, दोनों के कोच थे।

टोटल फुटबॉल में, एक खिलाड़ी जो अपनी स्थिति से बाहर निकलता है, तो टीम का कोई अन्य खिलाड़ी उसका स्थान ले लेता है। इस प्रकार टीम की इच्छित संगठनात्मक संरचना को बनाए रखा जाता है। इस तरलरूपी प्रणाली में, कोई भी आउटफील्ड खिलाड़ी एक सामान्य भूमिका में नहीं होता है; कोई भी खिलाड़ी एक हमलावर, एक मिडफील्डर या एक रक्षक के रूप में खेल सकता है। गोलकीपर ही वह खिलाड़ी होता है जिसकी भूमिका तय होती है।

वर्तमान डच कप्तान विर्जिल वैन डेजक

टोटल फुटबॉल की सामरिक सफलता काफी हद तक टीम के भीतर प्रत्येक फुटबॉलर की अनुकूलन क्षमता पर निर्भर करती है, विशेष रूप से ऑन-फील्ड स्थिति के आधार पर भूमिकाओं को जल्दी से स्विच करने की क्षमता। सिद्धांत के लिए खिलाड़ियों को कई भूमिकाओं में सहज होना चाहिए; क्योंकि, यह उनसे उच्च तकनीकी दक्षता और शारीरिक क्षमता की मांग रखता है।

दोहा शहर

इस युग के दौरान अजाक्स ने कुछ बेहतरीन फुटबॉल खेले, जिनमें दो पूर्ण सत्रों (वर्ष 1971-72 और वर्ष 1972–73) के लिए घरेलू जीत हासिल की, वर्ष 1971-72 के पूरे सत्र में सिर्फ एक हार, और वर्ष 1972 (नीदरलैंड्स नेशनल लीग, यूरोपीय कप, यूरोपीय सुपर कप और इंटरकांटिनेंटल कप) में पांच खिताब जीतकर जश्न मनाया।

अपने शुद्धतम रूप में, टोटल फुटबॉल प्रोएक्टिव है, काउंटर-अटैकिंग नहीं है, जो पोज़िशनल इंटरचेंज और हार्ड प्रेसिंग पर आधारित है। एफसी बार्सिलोना और स्पैनिश राष्ट्रीय टीम फुटबॉल की एक शैली को "टिकी-टका" के रूप में जाना जाता है, जिसकी जड़ें फुटबॉल के सबसे महान आइकन जोहान क्रूफ़ के विजन में प्रस्फुटित हुए (जो वर्ष 1988 से वर्ष 1996 तक बार्सिलोना के प्रबंधक थे)। इस प्रकार स्पेन ने वर्ष 2010 फीफा विश्व कप जीता । दुर्भाग्य से यह वो डच टीम थी जो जोहान्सबर्ग में फाइनल में पिट गई थी।

चूंकि वर्ष 1986 फीफा विश्व कप से, भारत में लाइव टेलीविज़न प्रसारण शुरू हुआ, इसलिए भारत के फुटबॉल प्रशंसकों को जोहान क्रूफ़ के टोटल फुटबॉल को देखने का मौका नहीं मिला। पेले और माराडोना हमेशा भारतीय प्रशंसकों के मन में थे। फ़ुटबॉल विशेषज्ञ हमेशा क्रूफ़ को सबसे महान खिलाड़ी के रूप में मानते हैं। उनके साथ तुलनीय व्यक्तियों में ब्राजील के पेले, अर्जेंटीना के माराडोना, जर्मनी के फ्रांज बेकेनबॉयर, अर्जेंटीना के अल्फ्रेडो डि स्टेफानो, हंगरी के फेरेंक पुस्कस, फ्रांस के मिशेल प्लाटिनी, पुर्तगाल के यूसेबियो, जर्मनी के गर्ड मुलर और उत्तरी आयरलैंड के जॉर्ज बेस्ट शामिल हैं।

1974 के विश्व कप में उप विजेता पदक के लिए क्रूफ़ ने नीदरलैंड का नेतृत्व किया जो पश्चिम जर्मनी में आयोजित किया गया था और उन्हें टूर्नामेंट का खिलाड़ी नामित किया गया था। टोटल फुटबॉल की अपनी टीम की महारत की बदौलत उन्होंने अर्जेंटीना (4-0), पूर्वी जर्मनी (2-0), और ब्राजील (2-0) को पछाड़ते हुए इनके फाइनल में पहुंचने के सारे रास्ते को रोक दिया। अपनी टीम के सबसे दबदबे वाले प्रदर्शनों में से एक में अर्जेंटीना के खिलाफ क्रूफ़ ने खुद दो बार गोल किया, फिर उन्होंने डिफेंडिंग चैंपियन को हराकर ब्राजील के खिलाफ दूसरा गोल किया। उसने फाइनल में मेजबान वेस्ट जर्मनी का सामना किया। टीम के साथी जोहान नेकेंस ने स्पॉट किक से स्कोर बनाकर नीदरलैंड को 1-0 से बढ़त दिला दी और जर्मनों ने अभी तक गेंद को फेंका नहीं था। फाइनल के उत्तरार्ध के दौरान उनके प्रभाव को वोग्ट्स के प्रभावी मार्किंग द्वारा नियंत्रित किया गया था, जबकि फ्रांज बेकेनबाउर, उली होएने, और वोल्फगैंग ओवरथ मिडफील्ड पर हावी थे, और पश्चिम जर्मनी ने 2-1 से जीत हासिल की थी।

राष्ट्रीय टीम को आगामी विश्व कप के लिए क्वालीफाई कराने के बाद, अक्तूबर 1977 में अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल से क्रूफ़ रिटायर हो गए। उनके बिना, नीदरलैंड वर्ष 1978 के विश्व कप

में उपविजेता रहा जो अर्जेंटीना में आयोजित किया गया था। फाइनल में वे मेज़बान अर्जेंटीना से हार गए।

1990 के दशक में फैन्स, जिन्होंने डच टीम को वर्ष 1988 यूरो कप खेलते हुए मार्को वैन बास्टेन और राउड गुलिथ की प्रतिभा देखी थी, जिसने 1988 यूरो कप जीता था, उन्हें भी उपर्युक्त के साथ-साथ महान खिलाड़ी मानते हैं। वे इतालवी क्लब एसी मिलान में लगातार सफलता भी लाए। मार्को वैन बास्टेन, जो सभी मामलों में एक पूर्ण स्ट्राइकर थे और कैरियर में 277 गोल उन्होंने किया। लेकिन वर्ष 1993 में 28 साल की उम्र में अपना आखिरी गेम एक चोट के कारण खेला जो दो साल बाद उनकी सेवानिवृत्ति का कारण बना। वह बाद में अजाक्स और नीदरलैंड की राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच बने। और गुलिथ के बारे में क्या कहना। मध्य क्षेत्र में अपनी आकर्षक हेयर स्टाइल और दबदबे के साथ और टीम के कप्तान के रूप में, वह 1980 के दशक के उत्तरार्ध के स्टार थे। उनके साथ फ्रैंक रिज़कार्ड ने भी योगदान दिया। लेकिन, गुलिथ की डच टीम के विश्व कप का सपना वर्ष 1990 में 16 के दौर में और वर्ष 1994 में क्वार्टर-फाइनल में ही समाप्त हो गया।

वर्ष 1990 के मध्य में वैन बास्टेन, गुलिथ, फ्रैंक रिज़कार्ड की सेवानिवृत्ति ने डच पक्ष पर बहुत प्रभाव डाला। फिर, यह डेनिस बर्गकैम्प और पैट्रिक क्लुईवर्ट की शानदार स्ट्राइकर जोड़ी थी, जिसने डच को कुछ सफलता दिलाई। मिड-फील्डर और डिफेंडर जैसे, मार्क ओवरमार, एडगर डेविड्स, फ्रैंक डी बोअर, रोनाल्ड डी बोअर और गोल कीपर एडविन वैन डेर सर ने डच टीम को वर्ष 1998 में फ्रांस में आयोजित विश्व कप में चौथा स्थान हासिल करने में मदद की।

वर्ष 2010 का फीफा विश्व कप 19 वां फीफा विश्व कप था, यह 11 जून से 11 जुलाई, 2010 तक दक्षिण अफ्रीका में हुआ था। डच टीम में रॉबिन वैन पारसी, आरजेन रोबेन और वेस्ले स्नेजिडर शामिल थे जिन्होंने फाइनल में पहुंचने के लिए अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उन्होंने फाइनल में पहुंचने के लिए डेनमार्क, जापान, कैमरून, स्लोवाकिया, ब्राजील और उरुग्वे को हराया। जोहान्सबर्ग में फाइनल में उनके खिलाफ यूरोपीय चैंपियन, स्पेन था। विश्व कप फाइनल में स्पेन पहली बार आया था और डच टीम के लिए यह सुनहरा मौका था। 115 मिनट बिना गोल के गुज़रे। मिडफील्डर, आंद्रेस इनिएस्टा ने 116 वें मिनट में स्पेन के लिए गोल किया और स्पेन को अपनी पहली फीफा विश्व कप ट्रॉफी दिलाई। यह स्पेन की "टिकी-टका" शैली थी (इसे स्पेन की एफसी बार्सिलोना में क्रूफ़ द्वारा पेश किया गया था) जिसने डच सपनों को बर्बाद कर दिया था।

वर्ष 2014 के ब्राज़ील विश्व कप में रॉबिन वैन पर्सि, आरजेन रॉबेन और वेस्ले स्नेजिडर ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा दिखाई। पहले मैच में उन्होंने गत विजेता स्पेन पर 5-1 से शानदार जीत दर्ज की। यह एक वैन पारसी-रॉबेन शो था और मीडिया ने इसे बैटमैन-रॉबिन शो के रूप में मनाया। वे सेमीफाइनल में पहुंचे। लेकिन वे पेनल्टी शूटआउट में लायनेल मेस्सी के अर्जेंटीना से हार गए।

इसी अवधि के दौरान रॉबिन वैन पर्स, आरजेन रॉबेन और वेस्ले स्नेजिडर की सेवानिवृत्ति ने डच पक्ष में एक बड़ा प्रभाव छोड़ा, यहां तक कि वे अगले विश्व कप और यहां तक कि यूरो कप के लिए भी पात्र नहीं हुए।

वर्ष 2022 में, विश्व कप अरब देश, खतर में आयोजित किया जाएगा। आमतौर पर, विश्व कप टूर्नामेंट जून से जुलाई के महीने तक आयोजित किए जाते हैं। लेकिन, खतर में जून से जुलाई के दौरान अत्यधिक गर्म मौसम के कारण, 2022 टूर्नामेंट दिसंबर में आयोजित किया जाएगा। सभी मैच राजधानी शहर दोहा और उसके आसपास के स्टेडियमों में होनेवाले हैं।

यह भारतीय फुटबॉल प्रशंसकों के लिए स्टेडियम में सीधे मैच देखने का शानदार मौका होगा। मुझे पता है कि, अधिकांश भारतीय प्रशंसक लयानेल मेस्सी के विश्व कप उठाने के लिए प्रार्थना करेंगे, क्योंकि, यह उनका आखिरी विश्व कप होगा। मैं भी उनके लिए प्रार्थना करूंगा। लेकिन, अगर ऐसा नहीं हो रहा है, तो डच टीम को ट्रॉफी जीतना चाहिए। क्योंकि, एक टीम के रूप में उनके पास एक महान विरासत है।

ट्राफियों में सबसे महत्वपूर्ण

गुणगान मेरे प्यारे भारत का

शीश मुकुट पर हिमालय शोभित,
पग चरण वंदन करती सागर लहरें,
कल-कल बहते सुदंर झरनें,
मधुर स्वर गान करते मेरे प्यारे भारत का।

उगले सोना-मोती देश की धरती,
खेतों में लहराती सुहानी हरियाली,
शीतल मंद सुगंध पवन,
तन–मन को करती निर्मल-पावन,
वृक्ष टहनी पर बैठे पक्षी,
मीठे सुर में गाते गुणगान,
मेरे प्यारे भारत का।

हर ऋतु-मौसम की बहार यहाँ,
कई ऊँचे पर्वत, सपाट मैदान यहाँ,
रेतों के धोरें में तेज़ हवा,
अथाह पानी की झन्कार जहाँ,
रिमझिम बरसती बारिश की आवाज़,
गर्जन करते बादलों की तान यहाँ,
कल-कल बहती नदियों की जलधारायें,
करती गौरव गान मेरे प्यारे भारत का।

उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक,
अलग-अलग बोली-भाषा,
पग-पग बदलता पहनावा,
खान-पान की बहुल तस्वीरें,
दूर-दूर पर अलग रिवाज़-रस्में,
निराला है मेरा प्यारा भारत देश,
अनेकता में एकता का प्रतीक।

हिन्दु-मुस्लिम-सिख-इसाई,
मिलजुल कर रहते हैं सब भाई-भाई,
स्वच्छ भारत का इरादा हर दिल में,
स्वस्थ भारत का हौसला वतन में,
सूरज जैसी चमक हिम मस्तक पर,
सब ओर फहराए तिरंगा मेरे प्यारे भारत का।

अंजली गोयल
श्री पवन कुमार मंगल जी की पत्नी

आया होली का त्योहार

फाग के गीतों की धुन, खुशियों के बहारों के संग,
नयी उमंगों की थाप लिए, रंगों की मल्हार बिछाये,
मस्ती व धमाल मचाये, आया होली का त्योहार।

लाल पीला हरा गुलाबी, इंद्रधनुषी रंगों की बौछार लिए,
गुलाल गालों पर मले हुए, गुजिया-मिठाई का मीठापन लिए,
प्यार–स्नेह की पिचकारी साथ लिए, आया होली का त्योहार।

तितलियों-सा रंगीन रूप लिए,
सखा-सहेलियों को रंगने की आस लिए,
वातावरण में नया उल्लास जगाए,
पर हित जीवन जीने का संदेश लिए,
अपनों का प्यार–दुलार लिए, आया होली का त्योहार।

बच्चों की टोली आए, हाथों में पिचकारी लाए,
लोकगीतों का स्वर ढ़ोल बजाए,
मारे रंग भरी पिचकारी की धार, गुलालों की बौछार,
इन यादों को सजाए हुए,
मन में खुशियाँ छिपाए हुए, आया होली का त्योहार।

रंगों की प्यारी होली में, न प्रतिकार न इनकार न वैरभाव,
बस सब ओर प्यार ही प्यार, निर्बल-निर्धन को गले लगाना,
सबके चहरे पर मुस्कान लाना, सब के साथ घुल मिल जाना,
सबको अपने रंग में रंग देना, जमकर मस्ती धमाल मचाना,
यही तो है होली का त्योहार।

फाग – फाल्गुन महीना

एम. एस. धोनी

कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

रगों में जिसके क्रिकेट का शोला था भड़का।
मध्यम परिवार, राँची शहर का है वो लड़का।।
7 नंबर की जर्सी वाला क्रिकेट प्रेमियों का दिल जिसने लूटा।
क्रिकेट खेल का चाणक्य, एम. एस. धोनी नाम है उसका।।

ताज़ा है ज़हन में श्रीलंका के खिलाफ 183* की नाबाद पारी
यहां से पक्की कर ली थी उसने कप्तान बनने की तैयारी।।
0.08 सेकंड की बिजली की रफ्तार से,
विश्वभर में मशहूर अपने स्टम्पिंग कला की हथियार से,
जिसने कीमो पॉल का विकेट था झटका।
क्रिकेट खेल का चाणक्य, एम. एस. धोनी नाम है उसका।।

T20 ट्रॉफी हो या चैम्पियंस या फिर एक दिवसीय टूर्नामेंट,
अपने कप्तानी के नेतृत्व में ट्रॉफियों का अंबार दिया।
28 साल बाद विजयी छक्के के साथ,
विश्व कप खिताब जीत, पूरे देशवासियों का सपना साकार किया।।
जीत के दबाव में भी होता जिसे मैच फिनिशर का चस्का,
क्रिकेट खेल का चाणक्य, एम. एस. धोनी नाम है उसका।।

डी.आर.एस. की कॉल या फिर 22 गज के मैदान में चीते सी - दौड़,
सटीक निर्णय लेकर पलभर में खेल का रुख देता वो मोड़।
कैप्टन कूल बनकर जिसने मोह लिया था मन सबका,
क्रिकेट खेल का चाणक्य, एम. एस. धोनी नाम है उसका।।

क्यूँ है ?

स्नेहा वर्मा
श्री विजेंद्र कुमार जी की पत्नी

आज हर शख़्स परेशान-सा क्यूँ है ? हर किसी के दिल में एक तूफान-सा क्यूँ है ?
क्यूँ नहीं मिलता सुकून सोते-जागते ? ए मनुष्य! तू इतना नादान-सा क्यूँ है ?
क्या नहीं पता तुझे तेरी परेशानी का कारण ? यूँ इतना तू अनजान-सा क्यूँ है ?
आँखें खुली हैं पर दिमाग सोया-सा है, नाउम्मीदी में तू इतना बेजान-सा क्यूँ है ?

किस्मत के भरोसे कुछ नहीं मिलता, खुद को बुलंद करना ही पड़ेगा तुझको,
आगाज़ तो कहीं से करना ही होगा, अंजाम की तुझे इतनी परवाह-सी क्यूँ है ?
हाथ पर हाथ धरे बैठकर, यदि सोचेंगे कि कोई आकर करे मदद मेरी,
जब कोई नहीं है साथ देने वाला, फिर भी किसी से आस-सी क्यूँ है ?

किस ज़माने में जी रहा है तू, ज़माने के दस्तूर का इल्म नहीं है तुझको,
हम ज़माने से हैं, ज़माना हम से नहीं का अब तुझे भान-सा क्यूँ है ?
कस कमर, उपयोग कर बुद्धि, दिखा ज़माने को तेरी असली कीमत,
कर दे परास्त सबको अपने औचित्य से, यूं ही करता समय खराब तू क्यूँ है ?

चूम ले गगन अपनी सोच की ऊंचाइयों से, पाताल से गहरी दिल की गहराइयों से।
बता ज़माने को कि तू चाहता क्या है, वरना धरती पर तेरे आने का मकसद ही क्या है ?
ज़िंदगी छोटी है, जी ले इसे जी भर के, क्योंकि एक दिन मरना तो सबको है।
गमों के घेरे में रहकर, घुट-घुट कर इस ज़माने में, रोते हुए जीना अब क्यूँ है ?

ज्योति यादव
डॉ. विपिन कुमार यादव जी की पत्नी

आश्चर्यजनक किंतु सत्य

1. कोका कोला का वास्तविक प्रारंभिक रंग हरा था! (कोई आश्चर्य नहीं, समय के साथ प्रत्येक हरी वस्तु काली हो ही जाती है!)
2. मानव शरीर में सबसे शक्तिशाली मांसपेशी उसकी जीभ होती है। (बिलकुल सही, जनाब इसके कारण ही तो विश्व में कई युद्ध हो गए!)
3. हमारी उँगलियों के निशानों की तरह ही हमारी जीभ के निशान भी भिन्न होते हैं! (शुक्र है कि जीभ एक ही होती है, उँगलियों की तरह दस नहीं!)
4. आप अपनी जीभ से अपनी कोहनी को नहीं चाट सकते! (आपने अभी-अभी कोशिश की!!)
5. एक मगरमच्छ अपनी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता। (किंतु आप अपनी जीभ निकालकर उसे चिढ़ा सकते हैं, किंतु ध्यान रहे वह पिंजरे के भीतर हो!)
6. जिराफ अपनी जीभ से अपने कान साफ कर सकता है! (शुक्र भगवान का कि उसने मनुष्यों को इतनी लंबी जीभ नहीं दी!)
7. मनुष्य एवं जिराफ दोनों की गर्दन में समान संख्या में हड्डियाँ होती हैं! (अंतर यह है कि जिराफ अपनी गर्दन किसी दूसरे जानवर के सामने नहीं झुकाता।)
8. एक शिशु में एक वयस्क व्यक्ति की तुलना में लगभग 100 हड्डियाँ अधिक होती हैं! (अक्ल बढ़ने के साथ-साथ हड्डियाँ कम हो जाती हैं!)
9. महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा लगभग दुगुनी बार अपने आँखें झपकाती हैं!
10. एक व्यक्ति अपनी सांस रोक कर अपने आप को नहीं मार सकता! (शेर, बाघ या चीते को अपने सामने खड़ा देख सांस वैसे ही रुक जाए तो अलग बात है!)
11. लोग छींक आने पर आपको "जीते रहो" इसलिए कहते हैं क्योंकि छींकते समय आपका हृदय 1 मिलिसेकंड के लिए रुक जाता है! (वैसे अस्पताल के लंबे-चौड़े बिल देखकर हृदय इससे ज़्यादा समय के लिए भी रुक सकता है!)
12. यदि आप बहुत तेज़ छींकते हैं तो आप अपनी एक पसली तोड़ सकते हैं एवं यदि आप अपनी छींक रोकते हैं तो आप अपने सर अथवा गर्दन में अपनी एक रक्त-शिरा को फोड़ सकते हैं, जिससे तुरंत आपकी मृत्यु हो सकती है! (इसलिए छींकते रहें और जीते रहें!)
13. एक मनुष्य का हृदय अपने भीतर इतना दबाव उत्पन्न कर सकता है कि रक्त को 30 फुट की दूरी तक एक फुहार से फेंक सकता है।(इसका प्रयास कहीं पर भी बिलकुल न करें!)
14. औसतन लोग मृत्यु की अपेक्षा मकड़ियों से अधिक डरते हैं! (किंतु स्पाइडर-मैन को पसंद करते हैं!!)
15. मनुष्य शरीर के पेट में इतना घातक अम्ल होता है जो लौह-इस्पात को भी अपने में घोल ले! (लौह-इस्पात क्या जनाब, कई लोग तो सड़क, पुल, इमारतें भी अपने में पचा जाते हैं व डकार भी नहीं लेते!)
16. औसतन पुरुष एक दिन में अपने लगभग 40 व महिलाएं अपने लगभग 70 बाल खो देती हैं! (फिर भी हमेशा पुरुष ही गंजे होते हैं!!)

17. औसतन एक व्यक्ति लगभग 7 मिनट में सो सकता है! (किंतु उसके जागने में घंटों लग सकते हैं!!)

18. केवल दाँत ही मानव शरीर का वह अंग है जो स्वयं की मरम्मत नहीं कर सकता! (इसीलिए मानव के भी खाने के दाँत एवं दिखाने के और!)

19. सभी जानवरों में केवल मानव ही है जो एक सीधी रेखा खींच सकता है!(फिर भी मानव की ज़िंदगी गोल-गोल ही घूमती रहती है!)

20. सुअर कभी भी ऊपर आसमान की ओर नहीं देख सकते हैं! (ज़रूरत भी क्या है जब नाले में ही सौन्दर्य-बोध हो जाए!)

21. एक घोंघा तीन वर्ष तक लगातार सो सकता है। (और हम सभी मनुष्यों में आलसी ढूंढते रहते हैं!!)

22. सभी ध्रुवीय भालू वामहस्त (बाएँ हाथ से कार्य करने वाले) होते हैं।(परंतु यह बात उन्हें बताने वाले को थप्पड़ सीधे हाथ से भी पड़ सकती है!)

23. तितलियाँ अपने पाँवों से स्वाद लेती हैं! (तो क्या बैठती अपनी जीभ पर हैं?!)

24. ब्राज़ील में एक ऐसी तितली पाई जाती है जो चॉकलेट के रंग की होती है एवं उसकी गंध भी चॉकलेटजैसी ही होती है। (ब्राज़ील में कभी चॉकलेट न मिले तो तितली मत खा जाना!)

25. हाथी एकमात्र ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता। (शुक्र है वरना अगर आदमी पर कूद जाए तो आदमी इस दुनिया से 'कूद' जाएगा!!)

26. पिछले 4000 वर्षों में किसी भी नए जानवर को पालतू नहीं बनाया गया है। (वैसे एक 'पति' के होते हुए इसकी आवश्यकता भी नहीं!!)

27. शहद एक ऐसा भोज्य-पदार्थ है जो कभी खराब नहीं होता! (ठीक है, वैसे मदिरा के बारे में क्या विचार हैं?!)

28. अधिकतर लिपस्टिक में मछली के कांटे होते हैं! (शाकाहारी महिलाएं सावधान रहें!)

29. सिगरेट लाइटर का आविष्कार माचिस के आविष्कार से बहुत पहले हुआ था! (कोई आश्चर्यजनक नहीं, रेल गाड़ी का आविष्कार भी साइकिल से पहले हुआ था!)

30. अपने पास मोबाइल न होने के डर को नोमोफोबिया (Nomophobia) कहा जाता है। (आजकल तो यह कोरोना से भी बड़ा डर है!!)

अंतरिक्ष प्रश्नोत्तरी

1. 1970 के दशक के अग्रगामी सोवियत रोबॉटिक रोवर अवतरण कार्यक्रम?
2. कौन-सी कंपनी चांद्र मॉड्यूल का प्राथमिक संविदाकार थी?
3. चंद्रयान-2 रोवर का नाम बताइए।
4. भारत की जीपीएस समर्थित तथा भू-संवर्धित नौसंचालन प्रणाली का नाम बताइए।
5. प्रथम भारतीय उपग्रह का प्रमोचन कहां से किया गया था?
6. किस प्रमोचन यान के युगपत् से चंद्रयान-1 का प्रमोचन किया गया था?
7. भारत द्वारा अपने रॉकेट का उपयोग करते हुए प्रमोचित प्रथम उपग्रह?
8. ग्रहों के उपग्रह होते हैं। लेकिन कुछ उपग्रहों को उनकी परिक्रमा करनेवाले उपग्रह होते हैं। उन्हें क्या कहते हैं?
9. हॉलिवुड के किस मशहूर विज्ञान कथा चलचित्र के नायक हैं एस्ट्रो-बोटेनिस्ट मार्क वाट्नी?
10. अंतरिक्ष में ट्विटर का उपयोग करनेवाले प्रथम व्यक्ति कौन है?

षीजु चंद्रन
प्रधान, ओएईडी

उत्तर:
1. लूनोखोद
2. ग्रुम्मान
3. प्रज्ञान
4. गगन
5. कपुस्टिन यार
6. पीएसएलवी सी 11
7. रोहिणी
8. मूनमून
9. द मार्शियन
10. माइकेल जे मासिमिनो

सोनु यादव
वैज्ञा/इंजी-एससी, एसआर

बारिश

जब भी बारिश में मिट्टी की महक
मेरी सांसों में मिल जाती है,
मुझे मेरे घर, मेरे गांव,
मेरे बचपन की याद बहुत आती है।

वो कैसे खेतों में बैलों के पीछे,
दौड़े चले जाते थे,
वो कैसे कागज़ की नाव बनाके,
बारिश में चलाते थे,
अब तो अरमानों की नौका जैसे,
साहिल पे ही डूब जाती है।

वो कैसे तूफानों में भी बेख़ौफ़
बगीचे में चले जाते थे,
वो कैसे बारिश में माँ की
डांट के बाद भी खूब नहाते थे,
अब तो उन अटखेलियों को याद करके,
आँखें गीली हो जाती है।

वो कैसे फिसलन भरी पगड़ंडी पर
सरपट दौड़े चले जाते थे,
वो कैसे बिजलियों के कड़कने
पर चेहरे खिल जाते थे,
अब तो बादल के गरजने पर भी
खिड़कियां बंद हो जाती है।

जब भी बारिश में मिट्टी की महक
मेरी सांसों में मिल जाती है,
मुझे मेरे घर, मेरे गांव,
मेरे बचपन की याद बहुत आती है ॥

अनाथ बालक की चाह

माँ, अगर तुम पास होती तो अच्छा होता,
कहने को मैं भी किसी का बच्चा होता।

न होता अनाथ, न कोई लावारिस कहता,
तुम होती साथ तो ऐसी ज़िल्लतें न सहता,
इस ज़ालिम शहर में कोई तो अपना होता।

माँ, अगर तुम पास होती तो अच्छा होता,
कहने को मैं भी किसी का बच्चा होता॥

मैं भी गिरता तो तेरी उंगलियाँ पकड़ लेता,
लड़खड़ाते ही सही इस दुनिया से लड़ लेता,
तेरी तालीम से मैं भी आज शिखर पे होता।

माँ, अगर तुम पास होती तो अच्छा होता,
कहने को मैं भी किसी का बच्चा होता॥

जीवन तृष्णा और सदाचार

नितिन सिंह रघुवंशी
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसआर

एक बार दो देवदूत लंबी यात्रा कर रहे थे। यात्रा करते-करते जब वे थक गए तो उन्होंने सोचा कि कहीं विश्राम कर लेना चाहिए और वो अपना वेष बदल कर किसी धनी आदमी से विनती कर उनके घर पर रुक गए। वह एक संपन्न परिवार था, परंतु उन सब लोगों का आचरण उन दोनों देवदूतों को बड़ा ही रूखा लगा। उनका घर बहुत बड़ा था, उसमें अनेकों भव्य कमरे थे फिर भी देवदूतों को विश्राम करने के लिए उन्होंने एक बहुत ही छोटा-सा कमरा दिया। उन्हें कमरे के फर्श पर बग़ैर बिस्तर, सिर्फ ओढ़ने वाली चादर देकर सोने को कह दिया गया। शीत ऋतु होने के कारण दोनों ठीक से सो भी नहीं पा रहे थे। कुछ समय बाद उनमें से एक बड़े देवदूत ने दीवार में एक छेद देखा। उसने कुछ सोचा और फिर उस दीवार के छेद को अपनी जादुई हाथों से ऐसी सफाई से बंद कर दिया कि मानो वहां कोई छेद था ही नहीं। छोटा देवदूत यह सब देख रहा था। वह आश्चर्य से बोला... "इस परिवार ने हमारे विश्राम की इतनी ख़राब व्यवस्था की फिर भी आपने इनकी सहायता क्यों की?"। तब इस पर बड़ा देवदूत उत्तर देते हुए बोला... "मेरा विश्वास करो, जो जैसा दिखाई देता है वह वैसा होता नहीं है"।

फिर अगले दिन वो दोनों देवदूत उस परिवार को धन्यवाद देकर आगे अपनी यात्रा पर निकल गए। जब चलते-चलते फिर से संध्या हो गयी तो इस बार वे दोनों फिर से भेस बदल कर इस बार एक गरीब परिवार के घर विनती करके रुक गए। वह एक मज़दूर का परिवार था। उसके परिवार में उसकी पत्नी और एक छोटा बच्चा था । उस परिवार ने एक बिस्तर उन दोनों देवदूतों को सोने के लिए दे दिया और स्वयं वह परिवार एक ही बिस्तर पर सो गया। पर जब सुबह इन देवदूतों की नींद खुली तो वो मज़दूर ज़ोर-ज़ोर से दहाड़े मारकर रो रहा था। उसकी गाय मरी पड़ी थी । वह मज़दूर रोते-रोते बोला... "मेरे पास यही एक गाय थी और अब यह भी मर गयी, अब मेरे छोटे बच्चे को दूध कैसे मिलेगा"।

तब छोटे देवदूत ने बड़े देवदूत की ओर देख कर कहा... "यह आपने क्या किया? आपने इस मज़दूर की सहायता क्यों नहीं की? उसकी इकलौती गाय को नहीं बचाया और उस धनी परिवार के घर की दीवार तो झट से ठीक कर दी"। इस बात को सुनकर बड़ा देवदूत मुस्कुराते हुए बोला.. "मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि जो जैसा दिखाई देता है वह वैसा होता नहीं है। रहा प्रश्न इस मज़दूर का, तो मैं कल देर रात तक जागा हुआ था। मुझे नींद नहीं आ रही थी और मैंने देखा कि यमदूत इस मज़दूर के प्राण लेने आया है, तब मैंने उस यमदूत से प्रार्थना की और उसे विवश कर दिया कि वह उसके बदले उसकी गाय के प्राण ले जाये। जहाँ तक उस धनी परिवार की दीवार का छेद ठीक करने की बात है, मैं तुम्हें बता दूँ कि मैंने दीवार के पार देख लिया था कि उन्होंने अपना सारा धन दीवार के पीछे छिपा कर रखा है, और चिह्न के रूप में वह छोटा-सा छेद बना दिया है। इसी वजह से मैंने वो छेद ही भर दिया था। अब वह पूरा जीवन अपने छिपाए हुए धन को ढूंढते रहेंगे और इसके लिए अंततः परेशान होकर अपना पूरा घर तोड़ डालेंगे"।

मित्रों, इस कहानी के माध्यम से हमें ये समझना चाहिए कि कभी-कभी इस भौतिक जीवन रूपी तृष्णा में अंधा होकर हम निंदनीय आचरण करते हैं और हमारा यही आचरण हमारे पतन का कारण बनता है। वहीं इसके विपरीत जब हम जीवन में सदाचार का पालन करते हैं तो ईश्वर हमारी सहायता विपरीत परिस्थितियों में भी करते हैं। हम सभी का प्रेम, व्यवहार और आचरण सबके लिए अच्छा होना चाहिए और उसे अच्छा बनाए रखने का सतत प्रयास करते रहना चाहिए। पता नहीं कब कौन व्यक्ति किसी देवदूत के रूप में हमारी सहायता कर जाये। एक उत्कृष्ट मनुष्य सिर्फ अपने आचरण से और अपने कर्मों से जाना जाता है। हम सबको इसे अपने जीवन में प्रयोग में लाना चाहिए वरना यदि यह सिर्फ कहने या ज्ञान देने की बात है तो यह सब दीवारों और पुस्तकों में भी लिखी होती है और सिर्फ लिखी हुई बातों से हमें या हमारे समाज को कोई लाभ नहीं होने वाला।

सी कमलाम्मा
श्रीमती मालिनी जी की माँ

अज्ञेय के काव्य में व्यष्टि और समष्टि

"यह दीप अकेला स्नेह भरा,
है गर्व भरा मदमाता पर,
इसको भी पंक्ति को दे दो।"

ये पंक्तियाँ वर्ष 1978 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' की है। हिंदी के आधुनिक साहित्य में बौद्धिक संवेदना का सूत्रपात करनेवाले कवियों में, उनका नाम शीर्ष पर है। प्रयोगवादी, नयी कविता के क्षेत्र में अज्ञेय की उपस्थिति जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही विवादास्पद भी। वे व्यक्तिवादी और घोर अहंवादी घोषित किए गए। सच तो यह था कि उनको मौजूदा दौर से काटकर देखा गया था।

संप्रेषण एक अनिवार्य समष्टिगत तत्व है। यह रचनाकार का किसी के लिए समर्पण है। समर्पण किसी भी हालत में वैयक्तिक नहीं हो सकता। अतः अज्ञेय के काव्य के समष्टि तत्वों को परखने के मेरे आग्रह का कारण भी यही तो है। दावा यह नहीं कि उनके काव्यों की वैयक्तिकता का निषेध करते हुए उनमें सामाजिकता की प्रतिष्ठा करूँ। किंतु उनकी इन पंक्तियों की जाँच करूँ कि -

"विश्वजन की अर्चना में कभी
बाधक न था व्यष्टि का सम्मान "

इसकी सार्थकता की स्थापना कर सकूँ तो इस प्रयत्न को सार्थक पाऊँगी।

दीप अकेला है, स्नेह भरा है, गर्व भरा है और मदमाता है। प्रकाश दीप की शर्त है। वह प्रकाश, ज्ञान और संस्कृति का प्रतीक है। लेकिन उसकी सार्थकता पंक्ति के साथ मिलने में है। पंक्ति में मिलकर भी उसकी निजता और गरिमा बनी रहती है। पंक्ति की चरितार्थता, अकेले दीपों की पार्थिवता और अद्वितीयता है। ये पंक्तियाँ समाज के प्रति कवि के दृष्टिकोण का घोषणापत्र है। वे मानते हैं कि दीपावली की शोभा, हर दीप की निजता और महिमा है। यही उनकी व्यक्तिमूलक सामाजिकता है। वे व्यक्ति को परिमार्जित कर, कुंठा रहित इकाई के रूप में, समाज को सौंपना चाहते हैं। उनकी दृष्टि में निकम्मे व्यक्तियों के समूह को समाज नहीं कह सकते। वह झुंड है। झुंड के साथ बहनेवाला स्वतंत्र नहीं; उसमें स्वतंत्र निर्णय या वरन् की स्वतंत्रता नहीं। ऐसे व्यक्तियों का बौद्धिक विकास कैसे संभव होगा? वह दूसरों की अंगुली पर चलता

है, इसलिए कैसे उसका परिष्कार संभव है? अतः मानववादी कवि अज्ञेय, व्यष्टि की सत्ता की रक्षा करते हुए, उसे समष्टि योग्य बनाये रखना अपना काव्य-धर्म मानते हैं।

'नदी के द्वीप' कविता भी उनकी इसी मनोवृत्ति का अनावरण करती है।

"किंतु हम हैं द्वीप,
हम धारा नहीं है,
स्थिर समर्पण है हमारा
हम सदा से द्वीप है स्रोतस्विनी के
किंतु हम बहते नहीं है
क्योंकि बहना रेत होना है।"

(नदी के बिना द्वीप का अकेले निर्माण नहीं हो सकता। किंतु द्वीप स्रोतस्विनी की धारा नहीं है। उसके साथ बहता नहीं है। नदी के साथ बहना रेत होना है।)

यही अज्ञेय का समष्टि चिंतन है। उनका व्यक्ति, समाज से कटा हुआ नहीं है। वे चाहते हैं कि हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का धनी हो और समवाय के लिए अर्चना भी। व्यष्टि का कल्याण ही समष्टि का मंगल है। इन दोनों के बीच, दो किनारों को मिलानेवाले सेतु-धर्मिता का भाव उसे स्वीकार है।

उनकी "मैं वहाँ हूँ" कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिए: -

"मैं हूँ, मैं यहाँ हूँ, पर सेतु हूँ इस लिए
दूर दूर दूर... मैं वहाँ हूँ
यह जो मिट्टी फोड़ता है,
मड़िया में रहता है और
महलों को बनाता है
उसकी, मैं आस्था हूँ
दूर दूर दूर... मैं वहाँ हूँ
यह नहीं कि मैं भागता हूँ
मैं सेतु हूँ... जो है और जो होगा,
दोनों को मिलाता हूँ।"

इस समाज की सदा यह आदत रही है कि व्यक्ति के दीप्त अन्तस की यहाँ कोई मान्यता नहीं है। विघटनों की गर्त में पड़े आधुनिक व्यक्ति की मुक्ति वे चाहते हैं। यह उनकी व्यक्ति केंद्रित सामाजिक-दायित्व-बोध का प्रमाण है। उनके अनुसार समाज में मानवीय - मूल्यों की पुनः स्थापना उन्हीं से ही संभव है जो स्वस्थ हो, स्वतंत्र हो, स्वच्छ हो, सुसंस्कृत और विवेकी हो।

उनकी प्रारंभिक रचनाओं में जो विद्रोही स्वर मुखरित है, वह भी व्यक्ति की अवहेलना से उत्पन्न अवसाद है। व्यक्ति के विकास में दबाव डालनेवाली सामाजिक असंगतियों के प्रति कवि में विद्रोह है।

"बना रही थी हमने दीपों की सुंदर ज्योतिर्माला,
हे कृतघ्न! तूने बुझ कर क्यों उसको खंड़ित कर डाला?"

अज्ञेय व्यक्ति को मनुष्यता के शिखर पर बिठाना चाहते हैं। इसके लिए वे व्यक्ति की हर तरह से मुक्ति और शुद्धि चाहते हैं। इस व्यक्ति केंद्रित सामाजिकता पर ही कुछ समीक्षकों ने पत्थर फेंका था।

मूल्यच्युति के वर्तमान संदर्भ में अज्ञेय का यह सामाजिक दृष्टिकोण चिंतनीय है। यंत्र सभ्यता की चकाचौंध में मनुष्य अपनी हार्दिकता को खो चुका है। इसने ग्रामों की सहजता को भी विषमय कर डाला है। यांत्रिक संस्कार की व्यस्तता और भाग-दौड़ ने मानव को भी यंत्रों के पुर्जे बना डाले।

आज का समाज कुछ विशेष अधिकार संपन्न और नितांत अधिकारशून्य, परंपरा से बंधे व्यक्तियों का झुंड़ बन चुका है। उस झुंड़ में कहीं खुशनसीबी की खुशबू है, तो कहीं बेदनसीबी की बदबू। इससे समाज का संतुलन नष्ट होता जा रहा है। यह सांस्कृतिक ओछापन है। इस गिरावट से समाज को कंधा देने की शक्ति ऐसे व्यक्ति में है, जिसमें वरण की स्वतंत्रता हो। वह व्यक्ति समाज को कभी गंदा नहीं कर सकता। यही अज्ञेय का व्यष्टि दर्शन है।

मूल्यों का निर्माण प्यार की मिट्टी में होता है। वह इंसान जिसने कोडा खाया है, वह कवि का भाई है। उनको उन्होंने देखा, समझा और गहरा पहचाना।

"इन्हीं तृण - फूल छप्पर से
ढँके ढुलमुल गँवारू
झोंपडों में ही हमारा देश बसता है

इन पीड़ितों को उबारकर, नेत्रोन्मीलन कर, मानवीय मूल्यों से संपन्न कर, विश्व जन की अर्चना में बाँट देने की चाह ही अज्ञेय के काव्य की सामाजिकता है। यही अज्ञेय की काव्य-यात्रा है ।

संदर्भः

- सदानीरा (कविता संग्रह)
- कितनी नावों में कितनी बार
- शिखर से सागर तक-अज्ञेय की जीवन यात्रा- रामकमल राय
- अज्ञेय का काव्य एक विश्लेषण-आचार्य दुर्गा शंकर

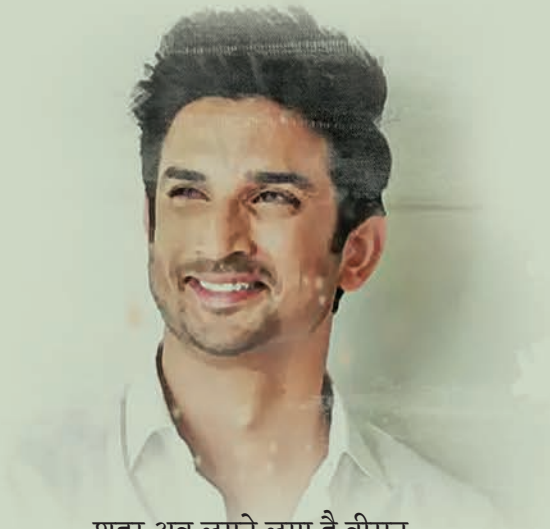

हमारे सुशांत

अमित कुमार
वैज्ञा/इंजी-एससी, एसआर

शहर अब लगने लगा है वीरान,
क्योंकि नहीं रहे सबके चहेते सुशांत।
क्या कहूँ मैं सुशांत सर के बारे में,
अनोखा जादू था उस सितारे में।

वह थे बॉलीवुड के बड़े कलाकार,
उन्होंने दी है हिट फिल्में लगातार।
दयालू तथा सरल था उनका स्वभाव,
बच्चों से था उन्हें अत्यंत लगाव।

चलिए ज़रा देखते हैं उनका इतिहास,
कैसे बने सुशांत इतने ज़्यादा ख़ास।
जन्मस्थल है उनका जिला पटना,
नहीं सीखा उन्होंने कभी पीछे हटना।

माता-पिता के स्नेही और लाड़ले,
चार बहनों के वह थे राज-दुलारे।
पटना में ही हुई उनकी प्रारंभिक शिक्षा,
फिर जागी उनमें इंजीनियरिंग की इच्छा।

पढ़ाई में न थी उनकी कोई सानी,
वह थे भौतिकी के बहुत बड़े ज्ञानी।
ज़िंदगी का नया मोड़ उन्होंने मोड़ा,
एक्टिंग के लिए इंजीनियरिंग भी छोड़ा।

डांस के साथ की अपनी नई शुरुआत,
2008 में मिला उन्हें प्रीत का किरदार।
2009 में पवित्र रिश्ता से मिली पहचान,
मानव देशमुख बने बिहार की शान।

उसी सेट पर हुई अंकिता से मुलाकात,
धीरे-धीरे दोस्ती से बनी प्यार की बात।
पवित्र तथा निर्मल था उनका प्यार,
वे दोनों थे एक दूसरे का संसार।

'काई पो चे' से शुरू हुई फिल्मी ज़ुबानी,
2016 में आई धोनीः द अनटोल्ड कहानी।
फिर न जाने क्या हो गई वो बात,
जिससे छूट गया दो प्रेमी का साथ।

सर की हर फिल्में होती थी शानदार,
चूँकि उनका अभिनय ही था जानदार।
सिखाया 'अन्नी' ने जीवन को सही मायना,
मिली "छिछोरे" को सबसे काफी सराहना।

अंतिम लव स्टोरी आयी दिल बेचारा,
'मैनी' अब छोड़ गए थे साथ हमारा।
वह थे एक अनोखा चमकता सितारा,
फिर वह क्यों छोड़ गए ये संसार सारा।

अभी भी ढूँढ़ती है उन्हें करोड़ों निगाहें,
आलिंगन करना चाहती है कई बाहें।
छिछोरे में उन्होंने ही सबको सिखाया,
सुसाइड़ को सबसे बुरा रास्ता बताया।

फिर क्यों थामा उन्होंने मौत का हाथ,
आखिर क्यों भूल गए अपनी कही बात।
सबके मन में है बस यही सवाल,
किसने लाया उनके जीवन में भूचाल।

सिखा गए वह सफलता का सही अर्थ,
सिर्फ ख्याली पुलाव पकाना है व्यर्थ।
वह थे मस्त प्रतिभाशाली – असाधारण,
करोड़ों लोगों के थे एक आदर्श उदाहरण।

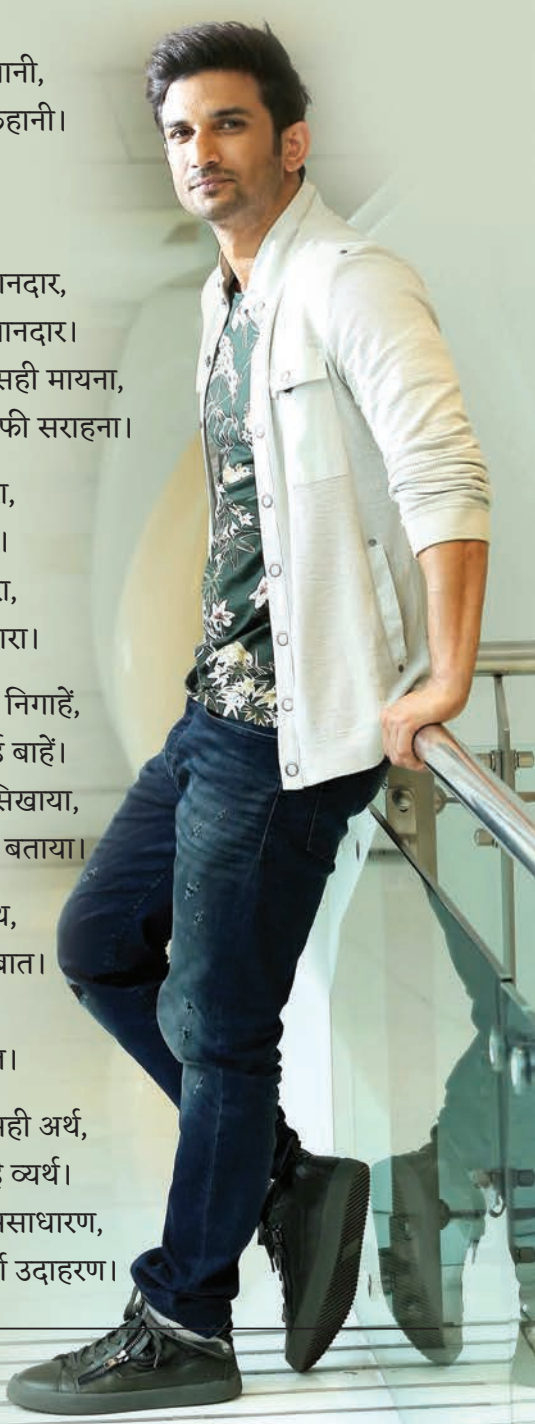

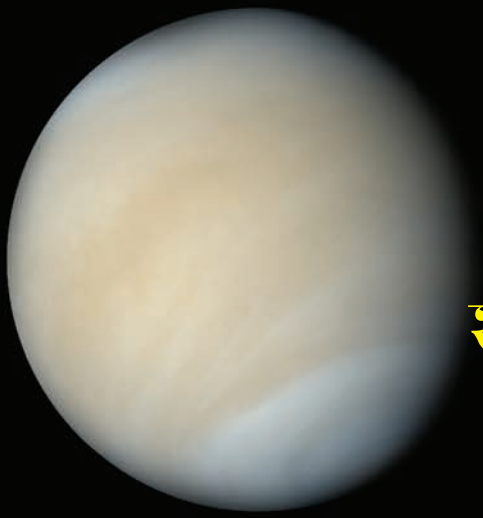

शुक्र ग्रह के बारे में रोचक तथ्य

विजेंद्र कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई, पीसीएम

शुक्र (वीनस) ग्रह, सबसे छोटे बुध ग्रह के बाद सूर्य के पास दूसरा ग्रह है और बृहस्पति ग्रह के बाद दूसरा सबसे बड़ा स्थलीय ग्रह है। शुक्र को कभी-कभी लगभग समान आकार और द्रव्यमान के कारण पृथ्वी की बहन ग्रह के रूप में संदर्भित किया जाता है। शुक्र के पास चंद्रमा जैसा कोई प्राकृतिक उपग्रह नहीं है। 12104 किलोमीटर के व्यास के साथ शुक्र पृथ्वी से थोड़ा छोटा ग्रह है। माना जाता है कि शुक्र एक केंद्रीय लौह कोर,चट्टानी मेटल और सिलिकेट क्रस्ट से बना है। शुक्र ग्रह पर सतह का तापमान 471°C तक पहुँच सकता है। अपनी धुरी (साइडरियल डे) पर एक बार घूमने में पृथ्वी के 243 दिन लगते हैं। पृथ्वी के 365 दिन की तुलना में शुक्र ग्रह 225 दिन में सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करता है। शुक्र की सतह पर एक दिन (सौर दिन) में 117 पृथ्वी के दिन लगते हैं।

शुक्र अधिकांश अन्य ग्रहों के विपरीत दिशा में घूमता है:

इसका मतलब है कि शुक्र ग्रह,सूर्य के विपरीत दिशा में घूम रहा है, इसे प्रतिगामी घूर्णन के रूप में भी जाना जाता है। इसका एक संभावित कारण एक क्षुद्रग्रह या अन्य वस्तु के साथ टकराव हो सकता है।

रात के आकाश में शुक्र दूसरी सबसे चमकीली वस्तु है:

सूर्य सबसे चमकीला तारा है। सूर्य के बाद चंद्रमा (पृथ्वी का प्रकृतिक उपग्रह) ही सबसे उज्जवल है। शुक्र इतना चमकीला होता है कि इसे साफ आकाश में दिन के दौरान देखा जा सकता है।

शुक्र पर वायुमंडलीय दबाव पृथ्वी की तुलना में 92 गुना अधिक है:

शुक्र की सतह पर महसूस किया गया दबाव पृथ्वी पर समुद्र के नीचे के गहरे हिस्से के लगभग बराबर है।

शुक्र को अक्सर पृथ्वी का बहन ग्रह कहा जाता है:

पृथ्वी और शुक्र आकार में केवल 638 कि.मी. के अंतर के साथ बहुत समान हैं और शुक्र, पृथ्वी के द्रव्यमान का 81.5% है। दोनों में एक केंद्रीय कोर (अंतर्भाग),एक पिघला हुआ मैंटल (आवरण) और एक क्रस्ट (छाल) भी है।

शुक्र का समान पक्ष पृथ्वी का सामना हमेशा करता है जब पृथ्वी के सबसे करीब होता है:

यह इसलिए संभव है क्योंकि यह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण प्रभाव के कारण होता है।

शुक्रग्रह को मॉर्निंग स्टार (भोर का तारा) और इवनिंग स्टार (सांध्यतारा) के रूप में भी जाना जाता है:

प्रारंभिक सभ्यताओं में वीनस को दो अलग-अलग निकाय में सोचा जाता था। यूनानियों द्वारा इन्हें फॉस्फोरस और हेस्पेरस, और रोमनों द्वारा लूसिफर और वेस्पर कहा जाता था । जब सूर्य के चारों ओर शुक्र के घूर्णन की कक्षा पृथ्वी की कक्षा के पार निकल जाती है, तो शुक्र सूर्यास्त के बाद दिखाई देने के बजाय सूर्योदय से पहले दिखाई देने लगता है।

शुक्र हमारे सौर मंडल का सबसे गर्म ग्रह है:

औसत सतह का तापमान 462 डिग्री सेल्सियस है, और क्योंकि शुक्र अपनी धुरी पर झुकाव नहीं करता है, इसलिए कोई मौसमी भिन्नता नहीं आती है। लगभग 96.5 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड के घने वातावरण के कारण अत्यधिक गर्मी होती है और यह ग्रीनहाउस प्रभाव का कारण बनती है।

वर्ष 2015 में शुक्र का विस्तृत अध्ययन किया गया:

वर्ष 2006 में, वीनस एक्सप्रेस अंतरिक्षयान को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी द्वारा शुक्र के चारों ओर कक्षा में भेजा गया था

और यह मिशन वर्ष 2015 तक कार्यरत था। शुक्र की सतह पर 20 कि.मी. से बड़े 1,000 ज्वालामुखी या ज्वालामुखी केंद्र पाए गए हैं।

रूसियों ने सबसे पहले मिशन शुक्र प्रमोचित किया:

शुक्र ग्रह के लिए वेनेरा 1 अंतरिक्ष अनुसंधान यान मिशन वर्ष 1961 में शुरू किया गया था, लेकिन पृथ्वी से इसका संपर्क टूट गया। संयुक्त राज्य अमरीका ने भी शुक्र ग्रह के लिए, मेरिनर 1 नामक पहला अंतरिक्ष मिशन भी खो दिया, हालांकि वर्ष 1962 में, मेरिनर 2 मिशन ग्रह का माप लेने में सक्षम था। सोवियत संघ का वेनेरा 3 पहला मानव-निर्मित यान था जो वर्ष 1966 में शुक्र ग्रह पर उतरा था।

एक समय यह सोचा गया था कि शुक्र एक उष्णकटिबंधीय परलोक हो सकता है:

शुक्र के आसपास के सल्फ्यूरिक एसिड के घने बादल इसकी सतह को इसके वातावरण के बाहर से देखना असंभव बनाते हैं। यह केवल तब संभव हो पाया जब वर्ष 1960 में रेडियो मैपिंग विकसित की गई, जिससे कि वैज्ञानिक अत्यधिक तापमान और प्रतिकूल वातावरण का निरीक्षण करने में सक्षम हो पाए।

संदर्भ: https://space-facts.com/venus

यह सुंदर प्रकृति

कितनी सुंदर है यह धरा,
इसके नीले आसमान के साथ;
पक्षियों के साथ भरा हुआ।
सुंदर पहाड़ जो लंबे खड़े हैं
वह पेड़-पौधों से भरे हुए हैं।

वह चमकदार सूरज जो,
अपनी धूप देता है,
उसमें भी तो
अपनी विशिष्टता है।
वह छोटे और बड़े बादल जो
बारिश देते हैं;
हमें याद दिलाते कि
कुछ भी एक जैसा नहीं रहता है।

नवनीत संतोष कृष्णन
डॉ. संतोष जी के सुपुत्र

पेड़ों का महत्व

पेड़ मत काटो, क्यूंकि पेड़ का हुआ अभाव।
पेड़ से है छाँव और गर्मी का कम करे प्रभाव॥

पेड़ों को रोज़ पानी देना, क्यूंकि पेड़ देते भोजन।
पेड़ अगर ना होते तो कैसे चलता हमारा जीवन॥

हम पेड़ों को प्यार करें, वो फल, सब्जियाँ देते।
पेड़ों से निर्मित व्यंजन खाकर हम सब हैं ज़िंदा रहते॥

हे ईश्वर! पेड़ों को संजोना, क्यूंकि पेड़ हैं सबसे बढ़िया।
पेड़ नहीं हुए अगर तो फिर कैसे चलेगी दुनिया॥

पर अब इस दुनिया में, पेड़ों की होने लगी कमी है।
पेड़ हमको रखते थे स्वस्थ, अब बीमारियाँ बढ़ने लगी हैं॥

आइए हम सब पेड़ लगाएँ अच्छा-सा उद्यान बनाएँ।
स्वयं के उद्यम से फिर से हरियाली और खुशहाली लाएं॥

समृद्धि वर्मा
श्री विजेंद्र कुमार जी की सुपुत्री

ट्रिस्टन डा कुन्हा: पृथ्वी का एक अनूठा स्थान

विपिन कुमार यादव
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसपीएल

मित्रों, कोरोना-19 की महामारी के दौरान लॉकडाउन में हम सभी बेचैन हो उठे थे, क्यों? इसलिए कि हमें बाहर जाने से, लोगों से मिलने-जुलने से, एक शहर से दूसरे शहर यात्रा करने से रोका जा रहा था। किंतु फिर भी हमारे पास चलते हुए मोबाइल फ़ोन, इंटरनेट व सैटेलाइट टीवी आदि उपकरण थे जिनसे हम अपनी बोरियत मिटा सकते थे।

अब आप कल्पना कीजिए कि पृथ्वी पर आपको एक ऐसे छोटे से टापू पर छोड़ दिया गया है जो एक विशालकाय ज्वालामुखी का घर है व जिसका कुल क्षेत्रफल मात्र 98 वर्ग किलोमीटर है। आप सोचेंगे - तो क्या हुआ हमारे अंडमान-निकोबार द्वीप-समूह में भी अनेक टापू हैं जो ऐसे ही हैं। अब यदि मैं कहूँ कि इस टापू पर मात्र 250 लोग रहते हैं और यह टापू अटलांटिक महासागर के बिलकुल बीच में स्थित है जहाँ से निकटतम दूसरी मानव बस्ती 2000 किलोमीटर दूर है व यहाँ पहुँचने का एकमात्र साधन नौका द्वारा है, तो!! आप शायद विश्वास नहीं कर पाएंगे किंतु यह सत्य है। विश्व में एक ऐसा स्थान है – 'ट्रिस्टन डा कुन्हा' टापू जिसे विश्व का सुदूर व एकाकी स्थान कहा गया है। इस टापू की खोज वर्ष 1506 में एक पुर्तगाली नाविक 'इल्हा डे ट्रिसटाओ डा कुन्हा' ने की जिसने इसे अपना नाम दे दिया। ऐसा कहा जाता है कि इस टापू पर पहली बार वर्ष 1520 में पुर्तगाली नाविक उतरे थे किंतु यह तथ्य निर्विवाद रूप से स्थापित है कि 7 फरवरी, 1643 को इस टापू पर डच ईस्ट इंडिया कंपनी के नाविक उतरे थे व इसके बाद लगातार यहाँ नाविक आते रहे। इस टापू पर रहने के उद्देश्य से सबसे पहले अमरीका के जोनाथन लैम्बर्ट अपने दो साथियों के साथ दिसंबर 1810 में आए तथा बाद में उनका एक और साथी आया। वर्ष 1816 में ब्रिटेन ने इस टापू को अपने अधिकार क्षेत्र में ले लिया व दक्षिण अफ्रीका के अंतर्गत कर दिया। इसके बाद इस टापू पर ब्रिटिश मैरीन्स की एक टुकड़ी में रहना प्रारंभ कर दिया, जिससे यहाँ नागरिकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगी। 25 मार्च, 1824 को 'बेरविक' नामक जहाज़ यहाँ रुका था व उसने पाया कि उस समय इस टापू पर 22 पुरुष व 3 महिलाएँ थीं। वर्ष 1867 में महारानी विक्टोरिया के द्वितीय पुत्र एवं एडिनबरा के ड्यूक राजकुमार अल्फ्रेड ने ट्रिस्टन डा कुन्हा टापू का दौरा किया। अक्तूबर 1873 तक यहाँ पर कुल पंद्रह परिवार व 86 व्यक्ति रहते थे। अक्तूबर 1875 को ट्रिस्टन डा कुन्हा टापू ब्रिटिश क्राउन के अधीन हो गया। वर्ष 1936 में लंदन के समाचार-पत्र 'डेली टेलीग्राफ' ने यह प्रकाशित किया कि उस समय इस टापू

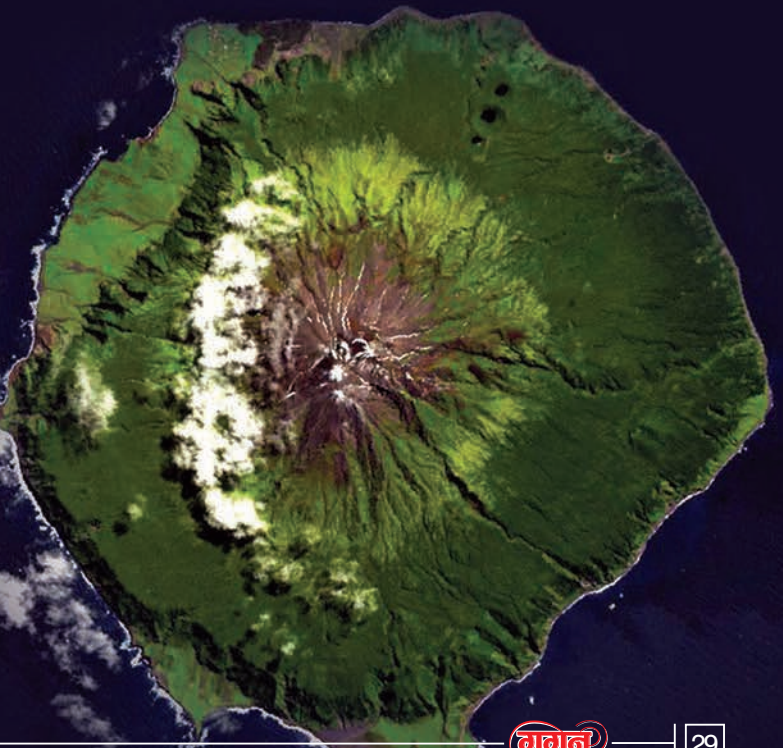

पर 167 लोग, 185 मवेशी व 42 घोड़े थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ट्रिस्टन डा कुन्हा टापू को ब्रिटेन की शाही नौसेना ने दक्षिण अटलांटिक महासागर में नाज़ियों की यू-बोट्स व नौका-चलन पर निगाह रखने के लिए गुप्त सिग्नल स्टेशन की तरह उपयोग किया। इसी मौसम व रेडियो स्टेशन ने इस टापू पर कई नए आधारभूत ढांचे खड़े किए जैसे एक विद्यालय, एक अस्पताल एवं एक जरनल स्टोर।

युद्ध के बाद भी यह विकास कार्य चलता रहा व वर्ष 1949 में इस टापू पर एक फैक्ट्री भी लगी, जिससे यहाँ के निवासियों को एक आमदनी का स्रोत मिला। 10 अक्तूबर, 1961 को ट्रिस्टन डा कुन्हा द्वीप के मध्य में स्थित ज्वालामुखी सक्रिय हो उठा जिसके कारण उस समय यहाँ रहने वाले सभी 264 निवासियों को पहले केपटाउन (दक्षिण अफ्रीका) तथा उसके बाद हैम्पशायर (इंग्लैंड) ले जाया गया था। ज्वालामुखी के शांत होने पर एक रॉयल सोसाइटी के अभियान दल ने यह पता लगाया कि ज्वालामुखी के लावा से यहाँ के निवासियों के घर पूर्णतया सुरक्षित हैं। इसके बाद 1963 में यहाँ के अधिकांश निवासी वापस लौट आए थे जो फिर कभी रहने के लिए इस टापू से बाहर नहीं गए। वर्तमान में राजनैतिक तौर पर ट्रिस्टन डा कुन्हा यूनाइटेड किंगडम के अंतर्गत आता है व इसके सभी नागरिकों को ब्रिटिश ओवरसीज़ राज्य क्षेत्रों की नागरिकता मिली हुई है। सरकार के नाम पर यहाँ लंदन से नियुक्त एक प्रशासक होता है जो सेंट हेलेना द्वीप पर नियुक्त गवर्नर के अधीन होता है।

ट्रिस्टन डा कुन्हा अटलांटिक महासागर के बीचों-बीच इस प्रकार स्थित है कि यहाँ से अफ्रीका महाद्वीप (केपटाउन) लगभग 2400 किलोमीटर दूर है तो दक्षिण अमेरिका महाद्वीप (रियो दि जेनेरो, ब्राज़ील) लगभग 3360 किलोमीटर दूर है। इसके सबसे निकट की मानव-बस्ती इसके उत्तर में स्थित लगभग 2400 किलोमीटर की दूरी पर एक अन्य द्वीप सेंट हेलेना है, जो इससे आकार व जनसंख्या दोनों में बड़ा है, साथ-ही वहाँ एक हवाई-अड्डा भी है जहाँ लंदन व केपटाउन से नियमित वाणिज्यिक उड़ाने आती रहती हैं।

23 मई, 2001 को एक चक्रवाती तूफान, जिसमें लगभग 120 मील प्रति घंटे की रफ्तार से तेज़ हवाएँ चलीं, ने इस टापू को तहस-नहस कर दिया जिसके कारण अनेक ढांचे क्षतिग्रस्त हो गए तथा कई मवेशी मारे गए। ब्रिटिश सरकार ने तुरंत आपातकालीन सहायता यहाँ पहुंचाई। वर्ष 2005 में इस टापू को यूनाइटेड किंगडम का पोस्ट-कोड TDCU 1ZZ दिया गया, जिससे यहाँ के नागरिकों को सुविधा हो सके।

वर्तमान में ट्रिस्टन डा कुन्हा की कुल आबादी लगभग 270 है जो इस द्वीप के उत्तर-पश्चिम की ओर एक बड़े से हरे-भरे मैदान में रहते हैं, जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। इस टापू की अपनी एक अनूठी सामाजिक व आर्थिक संरचना है जिसके अंतर्गत यहाँ के सभी निवासी परिवार खेती करते हैं तथा यहाँ की सारी भूमि समुदाय की है। इस टापू पर किसी भी बाहरी व्यक्ति को आकर ज़मीन ख़रीदने व बस जाने की अनुमति नहीं है। कृषि के अतिरिक्त वाणिज्यिक मछली पकड़ना यहाँ आय का एक प्रमुख साधन है। ट्रिस्टन रॉक लोब्स्टर, टापू की डाक-टिकटें व सिक्के यहाँ से निर्यात किए जाते हैं। सीमित मात्रा में पर्यटन भी यहाँ एक आय का साधन है। इस द्वीप के नागरिक खाद्य-उत्पादों के मामले में आत्म-निर्भर हैं व सभी अनाज, सब्ज़ियां आदि उगा लेते हैं व दूध, मांस आदि के लिए पशु-पालन भी करते हैं। बाक़ी ज़रूरत की वस्तुएँ केपटाउन से लेकर एक नौका यहाँ एक वर्ष में आठ या नौ बार आती है, जिसे वहाँ से यहाँ पहुँचने में 6 से 7 दिन लगते हैं। यदि कोई

बाहरी व्यक्ति यहाँ आना चाहे तो उसके लिए भी यहाँ आने का एकमात्र साधन यह नौका ही है क्योंकि यहाँ पर कोई हवाई-पट्टी नहीं है। ।

संचार के लिए ट्रिस्टन डा कुन्हा का अंतर्राष्ट्रीय कोड +290 वही है जो सेंट हेलेना द्वीप का भी है, जिसके द्वारा यहाँ के निवासी ब्रिटेन में टेलीफ़ोन कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ के निवासियों को वर्ष 1998 से वर्ष 2006 के बीच इंटरनेट की सुविधा भी प्रदान की गई थी जो काफी महंगी सिद्ध हुई व केवल ईमेल भेजने के काम ही आती रही। वर्ष 2006 से यहाँ 3072 kb/s की बैंडविड्थ के साथ एक इंटरनेट कैफे शुरू किया गया है जिसे अब आम नागरिक उपयोग में लाते हैं।

इस द्वीप के निवासियों को एक-दूसरे पर इतना विश्वास है कि यहाँ कोई भी अपने घर पर ताला नहीं लगाता। वैसे यहाँ एक पुलिस स्टेशन भी है जिसमें तीन हवलदारों के साथ एक पुलिस इन्स्पेक्टर ड्यूटी पर तैनात रहते हैं। यहाँ एक सुपर-मार्केट व रेस्टौरेंट भी है। यातायात के लिए इस टापू पर एक बस चलती है जिसका नंबर 'TDC-1' है।

ट्रिस्टन डा कुन्हा टापू पर प्रारंभिक शिक्षा यहाँ पर स्थित सेंट मेरी'स स्कूल में दी जाती है। इस विद्यालय में पाँच कक्ष, एक कंप्यूटर-कक्ष, एक कला एवं विज्ञान कक्ष व एक रसोई-घर भी है, जिससे यहाँ 4 से 16 वर्ष की आयुवर्ग के बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इसके आगे की पढ़ाई के लिए छात्र यूनाइटेड किंगडम और दक्षिण अफ्रीका चले जाते हैं, जिसके लिए ट्रिस्टन डा कुन्हा एसोसिएशन एजुकेशन ट्रस्ट फ़ंड उनकी मदद भी करता है।

यहाँ की स्वास्थ्य सेवाएँ सरकार द्वारा दी जाती हैं व अधिकतर समय मात्र एक रेसिडेंट डॉक्टर उपस्थित रहता है इसलिए शल्य-चिकित्सा व जटिल प्रजनन संबंधित सुविधाएं बेहद सीमित हैं। गंभीर अवस्थाओं में यहाँ द्वीप के निकट से गुज़रने वाले जहाज़ों द्वारा रोगियों व चोटिल व्यक्तियों को केपटाउन भेजा जाता है।

मनोरंजन के साधन के रूप में वर्ष 1984 में यहाँ स्थानीय टेलीविज़न की शुरुआत हुई, जिसमें मंगलवार, गुरुवार एवं रविवार को पहले से रेकॉर्ड किए गए कार्यक्रम दिखाए जाते थे। वर्ष 2001 तक यहाँ लाइव टेलीविज़न की शुरुआत नहीं हुई थी जब ब्रिटिश फोर्सेस ब्रॉडकास्टिंग सर्विस ने यहाँ बीबीसी वन, बीबीसी टू, चैनल 4, ITV एवं BFBS Extra को स्थानीय ट्रांसमीटर द्वारा रिले करना आरंभ कर दिया। हाल ही में इस सेवा को डिजिटल में अपग्रेड कर दिया गया है व अब अधिकतर घरों में कम-से-कम एक टीवी सेट है।

अपने सीमित संसाधनों व सीमित आबादी के बावजूद यहाँ के लोग प्रसन्न रहते हैं। कोरोना जैसी महामारी यहाँ कभी नहीं होती क्योंकि यहाँ का वातावरण स्वच्छ व प्रदूषण मुक्त है। यदि संभव हो सका तो मैं अपने जीवन-काल में एक बार यहाँ की यात्रा अवश्य करना चाहूँगा।

●●●

मेरी माँ

सुश्री संगीता दास
वैज्ञा/इंजी-एसडी, पीएफसी

माँ, मेरी माँ...
आगे देखूँ, पीछे देखूँ,
जहां देखूँ तेरा साया

माँ मेरी माँ,
उंगली पकड़ के चलना सिखाया
हाथ पकड़ के रास्ता दिखाया
आज मैं जहां पे हूँ
सब तेरी दुआ है माँ।

मेरी कविता के शब्द है तू,
शब्द में भी धनी है तू
तेरे बिना कुछ बनती नहीं,
तू नहीं होती तो मैं भी नहीं,

माँ मेरी माँ...
आज मैं एक माँ हूँ,
पर आज भी लगता है
मैं तेरी वही छोटी सी-गुड़िया हूँ।

कभी मुझे तुमसे अलग मत करना
हमेशा अपने आंचल में छुपा के रखना,
हर जन्म में मुझे तू ही मिले
मेरी आंसुओं से मैं तुम्हारी वंदना करूँ

माँ मेरी माँ...

विजेंद्र कुमार
वैज्ञा/इंजी-एसई, पीसीएम

तेरे वास्ते ऐ मेरी ज़िंदगी

तेरे वास्ते, हां तेरे वास्ते ऐ मेरी ज़िंदगी,
यूं ही भटक गए मेरे रास्ते।
मंज़िल मिली, ना मिला ये जहां,
मुकद्दर में क्या था और क्या हो गया।।

अब सोचता हूँ कि क्या था सही,
नसीब में जो था वो मिला क्यूँ नहीं।
किस्मत बदलने की अब ज़रूरत नहीं,
अब तक जो बदली वो क्या कर गयी।।

जहां से चले थे रुके हैं वहीं पर,
पर लगता है ऐसे जैसे थके-हारे हैं कहीं पर।
बदलाव बदल गया बदले में,
ऐसी अनिश्चितता देख सब आ गए सकते में।।

ना किसी की सुननी, ना किसी को सुनानी,
ना जाने क्या मोड़ लेगी ये कहानी।
खुद भी सीखूँगा और सबको सिखाऊँगा,
ज़िंदगी का असली मकसद बताऊंगा।।

ज़िंदगी सदा बलिदान नहीं होती,
खुद के भी पल होते हैं, ये सरेआम नहीं होती।
इस फलसफे को गर सीख गया होता,
सफल ज़िंदगी गैर और नाकाम नहीं होती।।

फलसफे : विद्या

विपिन कुमार यादव
वैज्ञा/इंजी-एसएफ, एसपीएल

डर लगता है

अब दिन में नहीं,
चाँदनी रात में डर लगता है,
सर पर छत नहीं है,
बरसात में डर लगता है।

इस ज़िंदगी ने तो बस
तकलीफ़ें ही दी हैं मुझे,
इसलिए अब हरेक सौगात
में डर लगता है।

अब इस इश्क़ को छोड़ दो
बस औरों के लिए,
मुझे अब प्यार की हर
बात में डर लगता है।

कहीं मेरी वजह से तुम
बदनाम न हो जाओ,
अब तो अपनी हर मुलाकात में
डर लगता है।

वीएसएससी को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विविध पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, तिरुवनंपुरम के तत्वावधान में वर्ष 2019-20 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में दिए जानेवाले पुरस्कारों में से वीएसएससी को निम्नलिखित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं:

उत्कृष्ट राजभाषा कार्य निष्पादन हेतु **तृतीय पुरस्कार**

गृह पत्रिका की श्रेणी में गगन के लिए **द्वितीय पुरस्कार**

उपर्युक्त पुरस्कार दिनांक 26.03.2021 को प्रगति सम्मेलन कक्ष, मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल के कार्यालय में आयोजित समापन समारोह के दौरान वितरित किए गए। श्री वी राजराजन, मुख्य पोस्टमास्टर जनरल, केरल सर्किल एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-I), तिरुवनंतपुरम ने बैठक / समारोह की अध्यक्षता ग्रहण की। वीएसएससी के लिए पुरस्कार केंद्र के मुख्य नियंत्रक महोदय, डॉ. बिजु जेकब ने प्राप्त किया।

अक्तूबर, 2020– मार्च, 2021 के दौरान वीएसएससी एवं एपीईपी में आयोजित विविध हिंदी कार्यक्रम

विविध कार्यशालाएं

आशुलिपिकों के लिए

कोविड महामारी के चलते इस छमाही में कार्यशालाओं की संख्या काफी कम रही। दिनांक 09.09.2020 को केंद्र के आशुलिपिकों के लिए वेबेक्स के माध्यम से एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 15 कर्मचारियों ने भाग लिया। सत्र का संचालन केंद्र के वरि. हिंदी अधिकारी श्री एम जी सोम शेखरन नायर जी ने प्रोत्साहन योजना, तिमाही प्रगति रिपोर्ट आदि से संबंधित विषयों में किया। सत्र काफी लाभप्रद रहा तथा सभी प्रतिभागियों ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की।

नवनियुक्त सहायक कर्मचारियों के लिए

केंद्र के विविध अनुभागों/एन्टिटियों में कार्यरत नव नियुक्त सहायकों को दो बैचों में विभक्त कर एक कार्यशाला का आयोजन दिनांक 29.12.2020 को वेबेक्स के माध्यम से किया गया। पहले बैच में 20 कर्मचारियों ने भाग लिया। दो सत्रों मे संचालित कक्षा का पहला सत्र श्री एम जी सोम शेखरन नायर, वरि. हिंदी अधिकारी, वीएसएससी ने किया, जिसमें उन्होंने केंद्र में हिंदी में काम करने पर उपलब्ध हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी और नेमी टिप्पणियों के बारे में बताया। दूसरा सत्र श्री आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आइआइएसटी ने मानकीकृत हिंदी के स्वरूप विषय पर लिया। कार्यशाला ज्ञानप्रद रहा और कर्मचारियों ने इसका भरपूर लाभ उठाया।

नवनियुक्त सहायकों के लिए

केंद्र के विविध अनुभागों/एन्टिटियों में कार्यरत नव नियुक्त सहायकों के दूसरे बैच के प्रतिभागियों के लिए कार्यशाला दिनांक 17.02.2021 को वेबेक्स के माध्यम से आयोजित किया गया, जिसमें 19 सहायकों ने भाग लिया। कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन श्री अनिल कुमार बी, वरि. प्रधान, पीजीए, वीएसएससी ने किया। उन्होंने कहा कि दैनंदिन कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग में वृद्धि लाना सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा कर्तव्य है। इसलिए उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे ऐसी कार्यशालाओं का, जो आपके लिए आयोजित की जाती हैं, उसका भरपूर लाभ उठाएं तथा केंद्र में प्रचलित सभी प्रोत्साहन योजनाओं में भाग लें। पहले सत्र का संचालन केंद्र के वरि. हिंदी अधिकारी, श्री एम जी सोम शेखरन नायर जी ने किया, जिसमें उन्होंने केंद्र में हिंदी में काम करने पर उपलब्ध हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारी दी और नेमी टिप्पणियों के बारे में बताया। दूसरा सत्र श्री आर. जयपाल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, आइआइएसटी ने मानकीकृत हिंदी के स्वरूप विषय पर लिया। कार्यशाला ज्ञानप्रद रहा और कर्मचारियों ने इसपर अपनी संतुष्टि व्यक्त की।

एपीईपी, आलुवा में प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए

अक्तूबर-दिसंबर, 2020 तिमाही के दौरान एपीईपी, आलुवा के प्रशासनिक क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए दिनांक 28.10.2020 को जिट्सी के माध्यम से एक अर्ध-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रस्तुत कार्याशाला में प्रशासनिक क्षेत्र के 14 कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यशाला का उद्घाटन श्री एम जी सोम शेखरन नायर, वरि. हिंदी अधिकारी, वीएसएससी द्वारा किया गया। कक्षा का संचालन श्रीमती महेश्वरी अम्मा आर, हिंदी अधिकारी, वीकेसी द्वारा किया गया। राजभाषा नीति व नियम, वार्षिक कार्यक्रम 2020-21 तथा प्रशासनिक शब्दावलियों एवं नेमी टिप्पणियों का प्रयोग व अभ्यास आदि कार्यशाला के प्रमुख अंग रहे। श्रीमती षीला सी जी, प्रशासन अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला समाप्त हुई।

एपीईपी, आलुवा में तकनीकी क्षेत्र के अधिकारियों के लिए आयोजित हिंदी-कार्यशाला

जनवरी-मार्च, 2021 तिमाही के दौरान एपीईपी, आलुवा के तकनीकी क्षेत्र के अधिकारियों के लिए दिनांक 30.03.2021 को हिंदी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रस्तुत कार्याशाला में तकनीकी क्षेत्र के 13 कर्मचारी उपस्थित रहें। कार्यशाला का उद्घाटन श्रीमती षीला सी जी, प्रशासन अधिकारी द्वारा किया गया। श्री एम जी सोम शेखरन नायर, वरि. हिंदी अधिकारी, वीएसएससी द्वारा कक्षा का संचालन किया गया। राजभाषा नीति व नियम, वार्षिक कार्यक्रम 2020-21 तथा प्रशासनिक शब्दावलियों एवं नेमी टिप्पणियों का प्रयोग व अभ्यास आदि कार्यशाला के प्रमुख अंग रहें।

हिंदी पखवाड़ा समारोह

कोविड-19 महामारी के चलते हर वर्ष की तरह केंद्र में हिंदी माह के बदले हिंदी पखवाड़ा 2020 का आयोजन 14.09.2020 से 28.09.2020 तक किया गया। ज़्यादातर सभी प्रतियोगिताएं डिजिटल माध्यम से हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषियों के लिए आयोजित की गई। साथ ही केंद्र के कर्मचारियों के विवाहितियों के लिए अलग से हिंदी भाषी तथा हिंदीतर भाषी की श्रेणी में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आयोजित सभी प्रतियोगिता में काफी तादाद में प्रतिभागियों ने भाग लिया।

हिंदी भाषी कर्मचारियों के लिए 3 प्रतियोगिताएं, क्रमशः **निबंध लेखन, कहानी लेखन** तथा **हिंदी एकल गायन** चलाई गई, वहीं हिंदीतर भाषियों के लिए **निबंध लेखन, कवितापाठ, तस्वीर क्या बोलती है?, हिंदी एकल गायन** तथा **हिंदी टंकण** प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। चालकों के लिए **समाचार पाठन** तथा ग्रुप डी से ग्रुप सी में उन्नयन प्राप्त कर्मचारियों के लिए **सुलेखन** प्रतियोगिता आयोजित की गई। हिंदी माह के दौरान अधिकतम कार्य हिंदी में करने हेतु लागू प्रोत्साहन योजना पर भी प्रतियोगिता चलाई गई तथा दसवीं तथा बारहवीं कक्षा में हिंदी में अधिकतम अंक प्राप्त बच्चों के लिए लागू पुरस्कार योजना भी हर वर्ष की तरह निरंतर चलाई गई। वर्तमान प्रतिबंधों के कारण पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन हर वर्ष की भांति धूम-धाम से नहीं किया जा सका। विजेताओं को प्रमाणपत्र भी डिजिटल माध्यम से दी गई।

राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार सभी प्रतियोगिताओं का आयोजिन किया गया तथा दिए गए निर्देश के अनुसार हिंदी भाषा से संबंधित कुछ प्रमुख सूक्तियों को केंद्र के इंट्रानेट में 14 दिनों तक प्रदर्शित भी किया गया।

विश्व हिंदी दिवस

केंद्र में विश्व हिंदी दिवस हर साल की तरह विविध प्रतियोगिताओं के साथ मनाया गया। दिनांक 11.01.2021 से 14.01.2021 तक हिंदी भाषियों तथा हिंदीतर भाषियों के लिए दो – दो प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिंदी भाषियों के लिए **वैज्ञानिक लेख** तथा **मेरी पुस्तक मेरे विचार** तथा हिंदीतर भाषियों के लिए **स्मृति परीक्षण** तथा **प्रशासनिक शब्दावली** पर प्रतियोगिताएं चलाई गई।

इस बार कर्मचारियों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताओं के साथ-साथ एक नवीन कार्यक्रम (आउटरीच) का आयोजन किया गया। इस सिलसिले में तिरुवनंतपुरम स्थित 4 कॉलेजों (यूनिवर्सिटि कॉलेज, सरकारी महिला कॉलेज, एम जी कॉलेज तथा केरल विश्वविद्यालय) के हिंदी स्नातकोत्तर तथा शोध छात्रों के लिए दो दिवसीय, दिनांक 21.01.2021 व 22.01.2021, व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें इन चारों कॉलेजों से 100 के ऊपर छात्रों ने पंजीकरण किया तथा करीबन 75 छात्रों तथा अध्यापकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य

था छात्रों को राजभाषा के क्षेत्र में उपलब्ध सुविस्तृत अवसरों की जानकारी देना तथा उनके सामर्थ्य को बढ़ाने हेतु उपलब्ध संसाधनों व सामग्रियों के बारे में जानकारी देना है, वहीं दूसरी ओर अंतरिक्ष संबंधी अनुप्रयोगों के कारण हो रहे विभिन्न सामाजिक फायदों तथा अंतरिक्ष खोज का इतिहास के बारे में उन्हें अवगत कराना।

चार सत्रों में व्याख्यान का संचालन किया गया, जिसमें वक्ता के रूप में वीएसएससी के प्रत्येक क्षेत्र के अनुभवी व्याख्याता आमंत्रित किए गए। कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन डॉ. राधिका रामचंद्रन, निदेशक, एसपीएल द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि राजभाषा व तकनीकी विषय पर जो भी व्याख्यान प्रस्तुत किए जाएंगे, वह आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा और एक रोज़गार के रूप में यह आपका दिशा-निर्देश करेगा। कार्यक्रम के सफल आयोजन की कामना करते हुए सत्र का प्रारंभ किया गया। कार्यक्रम का पहला सत्र डॉ. तरुण कुमार पंत, इंजीनियर एसजी, वीएसएससी, दूसरा सत्र श्री एम जी सोम शेखरन नायर, वरि. हिंदी अधिकारी, वीएसएससी, तीसरा सत्र श्री राजेश प्रभुदास मोहोद, इंजीनियर एसजी, वीएसएससी तथा अंतिम सत्र श्री सोनू जैन, हिंदी अधिकारी, सैक द्वारा किया गया। समापन सत्र का उद्घाटन डॉ. भानु पंत, ग्रुप निदेशक, एमएमजी द्वारा किया गया तथा उन्होंने ऐसे नवीन कार्यक्रम के आयोजन की सोच की सराहना की तथा यह उम्मीद की चारों सत्र छात्रों के लिए काफी लाभदायक रहा होगा। कॉलेजों के अध्यापकों व अन्य केंद्र के हिंदी अधिकारियों ने भी अपना आभार प्रकट किया।

वेबसाइट का द्विभाषीकरण

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की दिनांक 30.12.2020 व 22.03.2021 को आयोजित बैठक के दौरान इन्ट्रानेट के पांच सब साइटों **इसरो कर्मचारी क्वार्टर, टीओएमडी, एसटीएस, पीसीएम** तथा **एसटीआर** के हिंदी संस्करण का उद्घाटन अध्यक्ष श्री एस सोमनाथ, निदेशक, वीएसएससी द्वारा किया गया।

एपीईपी में हिंदी सप्ताह समारोह 2020

संघ सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं कार्यालयों में हिंदी में किए जा रहे कार्य की मात्रा को बढ़ाने तथा कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एपीईपी में सितंबर 14, 2020 से सितंबर 21, 2020 तक हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों के लिए डिजिटल विधा में निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं -

- हिंदी कवितापाठ
- हिंदी एकल गीत प्रतियोगिता
- हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग और प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना

आयोजित की गई जिसमें हिंदी माह के दौरान मूल काम हिंदी में करनेवाले कर्मचारियों को कार्य की मात्रा एवं गुणवत्ता के आधार पर पुरस्कृत किया गया।

हिंदी सप्ताह सामारोह में कर्मचारियों के परिवार को भी शामिल करने के उद्देश्य से विवाहितियों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता और 10 वीं तथा 12 वीं कक्षाओं की परीक्षाओं में हिंदी में अधिकतम अंक प्राप्त करनेवाले कर्मचारियों के बच्चों के लिए पुरस्कार योजना को भी कार्यान्वित किया गया।

एपीईपी में विश्व हिंदी दिवस समारोह 2021

विश्वभर में हिंदी के प्रचार और प्रसार को लक्ष्य करते हुए 10 जनवरी विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी उपलक्ष्य में एपीईपी में 11.01.2021 और 12.01.2021 को निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने बहुत उत्साह के साथ भाग लिया।

- हिंदी माध्यम से प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (टीम प्रतियोगिता)
- तस्वीर क्या बोलती है ?
- शब्द ज्ञान प्रतियोगिता

उप निदेशक (एसपीआरई), वीएसएससी की अध्यक्षता में दिनांक 05.02.2021 शुक्रवार को अपराह्न 1400 बजे, एपीईपी के बहुउद्देशीय हॉल में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें हिंदी सप्ताह समारोह 2020 और विश्व हिंदी दिवस समारोह 2021 के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

लक्ष्मी जी
वरि. हिंदी अनुवादक

शब्दार्थ-चिंतन

मलयालम तमिल से जन्मी एक द्रविड़ भाषा है तो हिंदी संस्कृत से जन्मी आर्य भाषा है। फिर भी, हम सब जानते हैं कि मलयालम और हिंदी के काफी शब्द और प्रयोग एक दूसरे के बहुत करीब हैं। इसलिए, इनमें से एक भाषा जाननेवाले व्यक्ति को दूसरी भाषा का अध्ययन करना बहुत आसान है। अनुवाद की दृष्टि से भी यह समानता अत्यधिक सहायक है।

लेकिन, मैं यहां ऐसे कुछ शब्दों व प्रयोगों की चर्चा करने जा रही हूँ, जिनका असली एहसास उस भाषा को ठीक तरह से समझकर ही मिलेगा; अन्यथा नहीं।

1. हिंदी का एक शब्द या प्रयोग है 'निभाना'। प्रयोग किए जानेवाले अवसर एवं साथ में आनेवाले शब्दों के अनुसार उसका अर्थ बदलता रहता है और उनमें से कुछ तो मलयाली को शब्दशः समझाना लगभग असंभव है। जैसे – ड्यूटी निभाना = To fulfill the duty, भूमिका निभाना =To play a role, वादा निभाना =To fulfill a promise, रिश्ता निभाना =?? यहां हम समझ सकते हैं कि किसी रिश्ते को निभाने का मतलब क्या है। लेकिन उसे शब्दों में उतारना थोड़ा कठिन है। चाहें तो इसे एक वाक्य में कुछ इस तरह समझा सकते हैं behave according to the relation or stand by a person with whom you have a relation. फिर भी, उसका अंतर्निहित भाव पूरी तरह शब्दों में स्पष्ट नहीं होता।

2. 'हम' उपसर्ग लगाकर अनेक शब्द हिंदी में हैं।जैसे – हमसफर, हमदर्द, हमराज़ आदि। इनके अर्थ बहुत कुछ एक-दूसरे से मिलते हैं, लेकिन अपना अलग भाव रखते भी हैं। चलिए, एक-एक करके देखें।

हमसफर	:	साथ में सफर करनेवाला
हमदर्द	:	सहानुभूति रखनेवाला
हमराज़	:	हमारे राज़ को जानकर उसे राज़ ही रखनेवाला
हमशक्ल	:	समान रूप रखनेवाला

इन सबका मलयालम में अनुवाद संभव है। मगर, एक शब्द में और एक ही उपसर्ग लगाकर नहीं कर सकता। अर्थात्, भाव और अर्थ का संचार ही हो सकता है; रूप की सुंदरता नहीं।

एम जी सोम शेखरन नायर
वरि. हिंदी अधिकारी, पीजीए

हिंदी का संकट

दो सौ वर्षों की अंग्रेज़ी हुकूमत से आज़ाद हुए हमें 74 वर्ष हो चुके हैं, किंतु वास्तविक युद्ध तो हमारी अपने-आप से है, हमारी मानसिकता में बदलाव लाने से है। आज़ादी तो हमें उस भाषा और व्यवस्था से भी मिलनी चाहिए जो आक्रमणकारियों द्वारा जबरन हमपर थोपी गई।

बहुभाषी देश होना फायदेमंद है या नुकसानदेह, यह वाद-विवाद का विषय हो सकता है। किंतु वास्तविक स्वतंत्रता एवं विकास के सूचकों में अपनी भाषा भी शामिल होनी चाहिए। प्रजातंत्र के 74 वर्ष, भाषाई क्षेत्र के आधार पर राज्य निर्माण, राजनीतिक परिदृश्य में निरंतर आ रहे बदलाव तथा राष्ट्र से अधिक क्षेत्रीय मुद्दों को दी जानेवाली प्राथमिकता, इन सबने जनमानस को अमूमन दो वर्गों में विभाजित कर दिया है। एक वर्ग, जिसके लिए हिंदी सीखना उसकी आवश्यकता है, रोज़ी-रोटी के लिए, रोज़गार के लिए। और दूसरा वर्ग, जिसकी मातृ-भाषा हिंदी नहीं, वह सोचता है कि अगर कोई अन्य भाषा सीखनी ही है तो सर्वाधिक लोकप्रिय राष्ट्र-स्तर की भाषा के बदले कोई अंतर्राष्ट्रीय भाषा हीं क्यों न सीखी जाए। नौकरी हो या चाकरी, उन्हें यही बेहतर विकल्प लगता है।

उन्हें दोष देना भी ठीक नहीं, समय का सर्वाधिक लाभार्थ उपयोग हो, यही तो सब चाहेंगे। अंग्रेज़ी पकी-पकाई रोटी है, तो हिंदी तो अभी गूथे जाने को तैयार हो रही है। शिक्षा, रोज़गार, व्यवसाय सभी जगह अंग्रेज़ी स्कोर कर जाती है। हिंदी की महानता तो उनके साहित्यकारों की वाणी में ही परिलक्षित होती है। हम भले आदर्श की टोपी पहनें, पर जब स्वार्थ की टाई कसती है, तो हम भी स्वहित में उसी मुख्य धारा के साथ प्रवहित हो जाते हैं और उसी पराधीन तंत्र का हिस्सा बन जाते हैं। अतः क्यों न कुछ त्यागने के बजाए, अपनाने की सोचें। अपने जीवन का मूल्यवर्धन करें। एक ऐसे समाज की स्थापना करें, जहाँ हम नई पीढ़ी से कह सकें कि अपनी भाषा में ही तुम सोच भी सकते हो और कर भी सकते हो।

यहाँ हिंदीतर भाषियों को दो कदम अधिक चलना होगा। उन्हें प्रांत से निकलकर देश के हित में यह कदम उठाना होगा। वैसे कोई भी भाषा सीखना आपके लिए नुकसानदेह तो नहीं हो सकता। साथ ही हिंदी भाषी भी यदि किसी एक अन्य प्रांतीय भाषा को अपनाकर उदाहरण प्रस्तुत करें, भाषाई सद्भावना की अलख जगाएं, तो ऐसे मुहिम को अतिरिक्त शक्ति मिलेगी। हिंदी के लिए हमें ऐसी ही मज़बूत आधारशिला तैयार करनी होगी। जब 'लेवल प्लेयिंग फील्ड' होगा, तभी भारत की यथार्थ शक्ति प्रकट होगी। 'सुश्रुत संहिता','चरक संहिता','आर्यभट्टीया','महाभास्करीया','वेद','पुराण' तथा 'उपनिषद्' आदि अनेक ग्रंथ हमारी धरोहर के परिचायक हैं।

कृष्ण मुरारी
हिंदी टंकक, पीजीए

भाषाओं के भंवर में हिंदी की वास्तविक स्थिति

भाषा की परिभाषा से हम सभी सुपरिचित है कि भाषा वह साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति वाचिक ध्वनियों का प्रयोग कर एक-दूसरे से अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। हमारे देश भारत में कई क्षेत्रों की मातृभाषा को शासकीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। सभी व्यक्तियों को अपनी मातृभाषा पर गर्व है और होना भी चाहिए। भय हो, चाह हो,स्नेह हो या प्यार हो... कोई भी एहसास हो, हर तरह का आंतरिक भाव लोग अपनीमातृभाषा में व्यक्त करते हैं। सभी में अपनी मातृभाषा के प्रति अभिमान, स्वाभिमान, और सम्मान की भावना होती है। बहुभाषी देशों की गिनती में भारत का शुमार है क्योंकि यहां 121 भाषाएं एवं 19,500 बोलियाँ बोली जाती हैं। जिसमें से 22 भाषाओं को भारत के संविधान में मान्यता भी दी गई है। तमिल, तेलुगु, मलयालम, पंजाबी, मराठी इत्यादि हर भाषाओं का अपना ही साहित्य, इतिहास, व्याकरण और गरिमा है। इन्हीं वजहों से विश्वभर में सबसे ज़्यादा बोली जानेवाली भाषा के देशों की सूची में भारत चौथे स्थान पर है।

संपूर्ण राष्ट्र की एकता का प्रतीक हिंदी:

लेकिन अगर हम गहनता से विचार करें कि यदि हम सभी सिर्फ अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं पर ज़ोर देंगे तो क्या होगा? देश की एकता और अखंडता का परिचय कैसे दे पाएंगे? अतः देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना नितांत आवश्यक है और वह एकमात्र भाषा है हिंदी। क्योंकि हिंदी ही एक ऐसी

भाषा है जो हमारे देश में सबसे ज़्यादा बोली, समझी और पढ़ी जाती है। हिंदी भाषा हर भारतीय को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करती है।

वर्तमान में हिंदी के कार्यान्वयन की यथार्थताः

आज हिंदी भाषा को कार्यान्वित करने के अथक प्रयास भी किए जा रहे हैं जिसमें सरकार ने हिंदी अधिकारी, अनुवादकों, टंककों, हिंदी प्रशिक्षक/प्रशिक्षण, प्रोत्साहन पुरस्कार योजनाएं इत्यादि की व्यापक व्यवस्था की है। लेकिन इसके बावजूद आज हिंदी अपने मुकाम तक नहीं पहुँच पायी या यूं कहें की इसकी स्थिति संतोषजनक नहीं हो सकी है। इसकी वजह यह है कि हम हिंदी भाषा को लेकर मानसिक रूप से तैयार नहीं हो पाएं है। इसका उदाहरण हमें कई जगहों पर देखने को मिल जाता है। जैसे कि किसी सरकारी कार्यालय में। सामान्यतः देखा जाता है कि कुछ बड़े हिंदी के जानकार अधिकारीगण भी हिंदी में टिप्पणियां लिखना, चर्चाएं करना अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ समझते हैं। परिवारजन, सगे-संबंधियों से भले ही बात करते हों हिंदी में, लेकिन कार्यालयों में कार्य करेंगे अंग्रेजी में ही। भाषा का संबंध किसी व्यक्ति विशेष के ओहदे से नहीं हो सकता यह तो मन के विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। अतः यह परम आवश्यक हो जाता है कि हिंदी को सभी वर्गों के मन से जोड़ा जाए।

यह तो हुई सरकारी कार्यालयों/संगठनों की बात, इससे बाहर निकलकर देखें तो हिंदी की स्थिति अत्यंत दुर्लभ हैऔर इसकीएक बड़ी वजह अंग्रेजी भाषा का होना भीहै। कहते हैं 'जितनी चादर हो उतना ही पांव फैलाना चाहिए' अतः अंग्रेजी तो अपना पांव फैलाते जा रही है और उसके पांव को ढ़कने के लिए चादर का काम हमारे राष्ट्रीय स्तर के रेडियो चैनल, टी.वी. मनोरंजन के कुछ साधन तो कर ही रहे हैं, दूसरी ओर वे लोग हैं जो संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को छोड़ अंग्रेजी भाषा को मुखरित करते हैं। हिंदीभाषी राज्यों में हिंदी कार्यान्वयन की बात करें तो हिंदी की स्थिति दयनीय है। भाषा की दृष्टि से 'क' क्षेत्र में आनेवाली हमारे देश की राजधानी दिल्ली की ही बात ले लेते हैं.., आज वहां हिंदी माध्यम के स्कूलों का वजूद मिट सा गया है और अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का वर्चस्व कायम हो गया है। यहां तक कि न्यायालय जिसे हम इंसाफ का मंदिर कहते हैं वहां भी अंग्रेज़ी का ही वर्चस्व है। इसके बावजूद भी कुछ आडंबरी इन बातों को नहीं समझ पा रहे हैं और संपर्क भाषा के रूप में अंग्रेजी का राग अलापते हैं। जब हमारी अपनी भाषा हिंदी है ही तो पश्चिमी भाषा अंग्रेजी को संपर्क भाषा के रूप में लाकर क्यों देश में फिर से गुलामी की दास्तां को दोहराया जा रहा है?

विकसित राष्ट्र के लिए अपनी भाषा का महत्वः-

आज हम किसी भी तकनीकी विषय में उच्चतर शिक्षा के माध्यम की बात करें तो अंग्रेजी भाषा ही उभरकर सामने आती है जिसका असर शिक्षा पद्धति पर साफ-साफ देखने को मिलता है। चुंकि हम देख सकते हैं कि अधिकांशतः मध्यम वर्ग परिवार के बच्चे हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करते हैं और वह छात्र जब तकनीकी विषय में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती पश्चिमी भाषा अंग्रेजी की होती है। किसी भी तरह अगर उसने नामांकन ले भी लिया तो रट्टुमल तोते की तरह रटकर परीक्षा उत्तीर्ण कर पाता है लेकिन उसको पक्का ज्ञान नहीं मिल पाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम अंग्रेजी भाषा के जंजीरों में जकड़कर क्यों रहें जब हमारी अपनी राजभाषा हिंदी है ही जिसे समझने और पढ़ने वालों की संख्या अन्य भाषा की अपेक्षा अत्यधिक है। माना कि शिक्षण संस्थानों/ क्षेत्रों में इसे संपूर्ण भारत में लाना थोड़ा मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं।हिंदी भाषा का प्रशिक्षण या उसके कार्यान्वयन के प्रति सजग प्रयास कर हम केवल अपनी औपचारिकता निभा सकते हैं अर्थात् हम किसी के ऊपर हिंदी जबर्दस्ती थोप नहीं सकते हैं।

हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सिर्फ कार्यालयों तक ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति विशेष को हिंदी के प्रति सम्मान और निष्ठा का भाव लाना होगा। इसके लिए हर जन के अंदर हिंदी के प्रति स्नेह जागृत होना आवश्यक है। हिंदी को कार्यान्वित करने के लिए देश के हर जन के अंदर इच्छाशक्ति का होना भी परम आवश्यक है। जनसमुदाय के अंदर हिंदी की अभिरुचि का विकास होने से हिंदी भाषा का क्रियान्वयन सुचारू रूप से अव्वल दर्जे पर आ सकता है और तभी हमारे राष्ट्र का संपूर्ण विकास हो पाएगा। विकास का संबंध भाषा से है, यह कोई बनावटी बात नहीं इसका जीता-जागता उदाहरण हम अन्य कई विकसित राष्ट्रों, देशों को देखकर समझ सकते हैं। चीन, जापान, रूस इत्यादि कई ऐसे देश हैं जिनके विकास का मूल कारण कुछ हद तक उनकी अपनी राष्ट्रभाषा है। राजभाषा हिंदी को संपूर्ण जनमानसपटल में संपर्क भाषा के रूप में लाकर ही इसे हम राष्ट्रभाषा का दर्जा दिला सकते हैं और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाकर अपने विकाशसील देश को विकसित देशों की सूची में ला सकते हैं।

राजभाषा मंजरी

संकलनः हिंदी अनुभाग

कुछ वैज्ञानिक प्रक्रियाएं एवं उससे संबंधित उपकरण

क्रम सं. Sl. No.	प्रक्रिया (Process)	उपकरण (Equipment)
1.	कणीकरण (Atomization)	कणित्र (Atomizer)
2.	संपीड़न (Compression)	संपीड़ित्र (Compressor)
3.	संघनन (Condensation)	संघनित्र (Condenser)
4.	संग्रहण (Collection)	संग्राहित्र (Collector)
5.	विचुंबकन (Demagnetisation)	विचुंबकित्र (Demagnetiser)
6.	वाष्पन (Evaporation)	वाष्पित्र (Evaporator)
7.	धूमन (Fumigation)	धूमित्र (Fumigator)
8.	अंतःक्षेपण (Injection)	अंतःक्षेपित्र (Injector)
9.	विलगन (Isolation)	विलगित्र (Isolator)
10.	दोलन (Oscillation)	दोलित्र (Oscillator)
11.	पृथक्करण (Separation)	पृथक्कित्र (Separator)
12.	तुल्यकालन (Synchronization)	तुल्यकालित्र (Synchronizer)
13.	अनुमापन (Titration)	अनुमापित्र (Titrator)
14	प्रेषण (Transmission)	प्रेषित्र (Transmitter)
15.	कंपन (Vibration)	कंपित्र (Vibration)

प्रशासनिक शब्दावली परिचय

1. Recruitment : भर्ती, बहाली
2. Promotion : पदोन्नति, तरक्की
3. Payment : भुगतान, अदायगी
4. Advance : अग्रिम, पेशगी
5. Affidavit : शपथपत्र, हलफनामा
6. Dismissal : पदच्युति, बर्खास्तगी
7. Advertisement : विज्ञापन, इश्तेहार
8. Admission : प्रवेश, दाखिला
9. Attendance : उपस्थिति, हाजिरी
10. Basic : मूल, बुनियादी
11. Bribery : घूसखोरी, रिश्वतखोरी
12. Business : कारोबार, व्यवसाय
13. Office : कार्यालय, दफ्तर
14. Buyer : क्रेता, खरीददार
15. Prize : इनाम, पुरस्कार

श्रुतिसम शब्दों के अर्थ-भेद

नीचे दिए गए शब्दों में से ज्यादातर सुनने में समान प्रतीत होते हैं किंतु उनके अर्थ में काफी अंतर है। कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:-

1.	संरक्षा, सुरक्षा	:	Safety, Security
2.	आरक्षण, परिरक्षण	:	Reservation, Preservation
3.	पर्यवेक्षण, अन्वीक्षण	:	Supervision, Invigilation
4.	प्रशिक्षण, शिक्षण	:	Training, Teaching
5.	रूपांतरण, लिप्यंतरण	:	Transformation, Transliteration
6.	स्थानांतरण, पारगमन	:	Transfer, Transit
7.	निर्वाह, पदार्थ, सार	:	Subsistence, Substance
8.	निरीक्षण, संस्थापन	:	Inspection, Installation
9.	सुधार, कामचलाऊ व्यवस्था	:	Improvement, Improvisation
10.	समापन, स्पष्टीकरण	:	Expiration, Exploration

1.	निदेशालय	: Directorate	9.	कार्यालय	: Office
2.	आयुक्तालय	: Commissionerate	10.	संग्रहालय	: Museum
3.	सचिवालय	: Secretariat	11.	पुस्तकालय	: Library
4.	समाहरणालय	: Collectorate	12.	केशकर्तनालय	: Barber Shop
5.	मंत्रालय	: Ministry	13.	न्यायालय	: Court
6.	मुख्यालय	: Headquarters	14.	रुग्णालय	: Hospital
7.	विद्यालय	: School	15.	शौचालय	: Toilet
8.	भोजनालय	: Hotel			

1. राजभाषा संकल्प संसद के दोनों सदनों द्वारा कब पारित किया गया ?
2. किस नियम के अंतर्गत केंद्र सरकार के कार्यालयों से हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है?
3. किस नियम के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किया जाना चाहिए?
4. किस नियम के अंतर्गत 14 निर्धारित दस्तावेज़ों को अनिवार्य रूप से द्विभाषिक (अंग्रेज़ी और हिंदी) रूप में जारी किया जाना चाहिए?
5. राजभाषा नियम 1976 के नियम 12 के अनुसार राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का कार्यालय में समुचित रूप से अनुपालन किसका उत्तरदायित्व है?
6. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए प्रयुक्त भाषाओं का क्रम किस प्रकार होना चाहिए?
7. हिंदी में मानक शब्दावली के निर्माण की ज़िम्मेदारी किस पर है?
8. सरकारी कर्मचारी एवं आम नागरिकों के लिए हिंदी सीखने हेतु शिक्षा मंत्रालय द्वारा सी-डैक की सहायता से किन ऐपों को तैयार किया गया है?
9. राजभाषा विभाग द्वारा अनुवाद प्रक्रिया में तेज़ी लाने हेतु सी-डैक, पुणे के तकनीकी सहयोग से निर्मित स्वदेशी स्मृति आधारित कंप्यूटर अनुप्रयोग का नाम?
10. राजभाषा विभाग द्वारा आधुनिक ज्ञान/विज्ञान की विभिन्न विधाओं में मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किए गए पुरस्कार का नाम क्या है?

1. 18 जनवरी, 1968
2. राजभाषा नियम, 1976 नियम 5
3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार
4. राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)
5. प्रशासनिक प्रधान
6. क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंत में अंग्रेज़ी
7. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग
8. लीला राजभाषा एवं लीला प्रवाह
9. कंठस्थ
10. राजभाषा गौरव पुरस्कार

अभिव्यक्ति साद्दश्य

प्रत्येक भाषा में किसी वाक्य में विशेष अर्थ का बोध कराने अथवा वाक्य के प्रभाव को बढ़ाने हेतु उचित मुहावरे, कहावत अथवा लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न भाषाओं में अलग-अलग संदर्भ द्वारा ऐसे भाव प्रकट किए जाते हैं, किंतु उनके निहितार्थ समान होते हैं। अंग्रेज़ी, हिंदी एवं मलयालम भाषा में ऐसे ही कुछ प्रयोगों के उदाहरण नीचे दिए गए हैं-

1.	अधजल गगरी छलकत जाय।	An empty vessel sounds much.	നിറകുടം തുളുമ്പില്ല.
2.	जो गरजते हैं वो बरसते नहीं।	Barking dogs seldom bite.	കുരയ്ക്കുന്ന പട്ടി കടിക്കില്ല.
3.	जैसा बोओगे वैसा काटोगे।	As you sow so shall you reap.	വിതയ്ക്കുന്നതേ കൊയ്യൂ.
4.	अंधेरे में तीर मत मारो।	Look before you leap.	ആഴമറിയാത്തിടത്ത് കാൽ വയ്ക്കരുത്.
5.	मुँह में राम, बगल में छुरी।	Beads about the neck and the devil in the heart.	അകത്ത് കത്തിയും പുറത്ത് പത്തിയും.
6.	दूर के ढ़ोल सुहाने लगते हैं।	Far away cows have no horns.	അക്കരെ നിൽക്കുമ്പോൾ ഇക്കരെപ്പച്ച, ഇക്കരെ നിൽക്കുമ്പോൾ അക്കരെപ്പച്ച.
7.	जैसा देश वैसा भेस।	When you are in Rome, do as the Romans.	ചേര തിന്നുന്ന നാട്ടിൽ ചെന്നാൽ നടുക്കണ്ടം തിന്നണം.
8.	आग में घी डालना।	To add fuel to the fire.	എരിതീയിൽ എണ്ണ ഒഴിക്കുക.
9.	जिसकी लाठी उसकी भैंस।	Might is right.	കൈയൂക്കുള്ളവൻ കാര്യക്കാരൻ.
10.	अंधों में काना राजा।	A figure among ciphers.	മൂക്കില്ലാരാജ്യത്ത് മുറിമൂക്കൻ രാജാവ്.

चुटकुले

जीभ में एक भी हड्डी नहीं होती फिर भी, यही जीभ इंसान की सारी हड्डियां तुड़वाने की 'ताकत' रखती हैं..!

"चाणक्य ने रफ़ कॉपी में लिखा था"!!

एक महिला अपने सहेली के घर गई 2 घंटे गपशप, चाय नाश्ता करने के बाद जाते समय बोली..,

डॉक्टर ने 14 दिन का होम क्वारंटाइन बोला है, तो सोची जाने से पहले सब सहेलियों से मिलती जाऊं...!

हसबेंड ने ऑफिस में बैठे-बैठे फेसबुक पर पोस्ट किया..,

"पंछी बन उड़ता फिरूं मस्त गगन में"

तभी वाइफ का कमेंट आया..,

"धरती छूते ही सब्जी ले आना अपने भवन में, वरना एक भी बाल नहीं बचेंगे तुम्हारे चमन में!!

एक लॉजिक तो मैं आज तक समझ नहीं पाया "धीरे बोलो, दीवारों के भी कान होते हैं!"

अरे भाई! मान लो कि अगर कान होते भी हैं, पर ज़ुबान तो नहीं होती न, अगर सुन भी लिया तो किसी को बताएंगे कैसे??

शराबी दारु पीने के बाद..,

अपनी पत्नी से : आप कौन हो?

पत्नी : पागल हो गए हो क्या? अपनी बीवी को भूल गए!

शराबी : नशा हर ग़म को भुला देता है..,बहन जी!!

एक यूट्यूबर को फाँसी दी जा रही थी,

जज : कोई आखिरी इच्छा??

यूट्यूबर : चैनल को सब्सक्राइब करें और बेल आइकन ज़रूर दबाएं।।

पप्पू : तुम ऑपरेशन कराये बिना ही हॉस्पिटल से क्यों भाग गए?

चिंटू : नर्स बार-बार कह रही थी कि डरो मत, हिम्मत रखो, कुछ नहीं होगा यह तो एक छोटा-सा ऑपरेशन है।

पप्पू : तो इसमें डरने वाली कौन-सी बात थी, सही तो कह रही थी नर्स।

चिंटू : वो मुझसे नहीं डॉक्टर से कह रही थी।

पप्पू : डेट्रॉल साबुन है?

दुकानदानर : हाँ है।

पप्पू : अच्छा वाला?

दुकानदार : हाँ भाई...

पप्पू : अच्छी क्वालिटी की है न..,

दुकानदार : हाँ भाई हाँ...

पप्पू : ठीक है...

उससे हाथ धोकर एक किलो आटा दे दो..!!!

बैंक में लोन पास हो गया था। बैंक मैनेजर ने चेक देने के लिए हाथ बढ़ाया।

ग्राहक ने कृतज्ञता पूर्वक कहा,

आपका यह ऋण में ज़िंदगी भर नहीं चुका सकूँगा।

फिर बैंक मैनेजर ने फिर हाथ पीछे खींच लिया और चेक अपनी दराज में रख लिया।

सीख : ज़्यादा साहित्यिक प्रयोग सोच-समझकर करें, कई बार यह महंगी भी पड़ सकती है।

एक बार एक आदमी जंगल में चला जा रहा था,

अचानक भालू देख सांस रोककर ज़मीन पर लेट गया,

ये देखकर भालू आया और उसके कान में बोला – भूख नहीं है, वरना सारी होशियारी इधर ही निकाल देता।

संता : आप क्या जॉब करते हैं?

बंता : सिंगर हूँ.....

संता : कभी देखा या सुना तो नहीं गाते हुए.....

बंता : मोहल्लेवाले चुप रहने के 20 हज़ार महीना देते हैं

सौजन्य : व्हाट्सैप्प

आपकी प्रतिक्रिया हमारी प्रेरणा

'गगन', क्रमांक-51 (अप्रैल-सितंबर 2020) प्राप्त हुआ। श्री पवन कुमार मंगल का तकनीकी आलेख 'क्वांटम संगणक : एक तेज संगणना तकनीक'; श्रीमती स्नेहा वर्मा का मनोवैज्ञानिक आलेख 'सामान्य बुद्धि'; श्री विजेंद्र कुमार की कहानी 'मनोवृत्ति' अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका का कलात्मक सौन्दर्य तथा विषय सामग्री-विन्यास किसी पत्रिका के संपादक के लिए निरंतर अनुकरणीय है। 'गगन' का रचनात्मक कौशल इस बात को दर्शाता है कि वीएसएससी में रचनाकारों का एक प्रबद्ध समूह है। आप स्वयं एक लेखक के रूप में जिस प्रकार अपनी राजभाषा टीम का नेतृत्व करते हैं, उसका अथक परिश्रमजन्य प्रयास पत्रिका में स्पष्ट रूप से झलक रहा है। मैंने पूर्व में आपसे एक बार कहा भी था कि आपके एक संस्मरण-आलेख ने हमारे कॉरपोरेशन के एक कार्मिक की 'मनोवृत्ति को सकारात्मक' कर दिया। एक सफल पत्रिका की इससे अधिक कसौटी क्या हो सकती है। श्री अंकुश राज के प्रेरक आलेख 'प्रेरक प्रसंग-परिश्रम सफलता की कुंजी' ने विशेष रूप से प्रभावित किया। आशा है कि पत्रिका के आगामी अंक में उनसे इसी प्रकार का एक और आलेख पढ़ने को मिलेगा।

शुभकामनाओं सहित,

कृते इलेकट्रॉनिक्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड

डॉ. राजनारायण अवस्थी
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी, राजभाषा अनुभाग

आपके कार्यालय द्वारा ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित "गगन" का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ है। मुखपृष्ठ के रूप में श्री सनोज एस द्वारा खींचे गए पैंगोंग त्सो झील लद्दाख का फोटोग्राफ अति सुंदर एवं आकर्षक है। श्रीमती अंजली गोयल की रचना "हमारे प्यारे बापू" अनूठी प्रस्तुति है। श्री सोम शेखरन नायर की रचना "सादा जीवन संतोषमय जीवन" जीवन को एक नई प्रेरणा देने वाली है। श्री अनिल कुमार गर्ग की रचना "क्रिकेट के अद्भुत तथ्य जो आपके होश उड़ा देगी" काफी सूचनाप्रद है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएं, चुटकुले अत्यधिक रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक तो हैं ही, साथ ही सुंदर छपाई के कारण पृष्ठ मनोहारी भी प्रतीत होते हैं। संपादक मंडल तथा पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति बधाई के पात्र हैं। "गगन" के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ।

आर महेश्वरी अम्मा
हिंदी अधिकारी, वीकेसी

आपके कार्यालय से ईमेल द्वारा प्रेषित हिंदी गृह-पत्रिका "गगन" के 51वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत आकर्षक है। पत्रिका में केंद्र की विविध वैज्ञानिक एवं राजभाषा गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला गया है। राजभाषा के कुशल कार्यान्वयन तथा हिंदी को लोकप्रिय बनाने एवं बढ़ावा देने की दिशा में आपका यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पेज नं. 36 पर प्रकाशित श्री अंकुश राज का लेख "परिश्रम सफलता की कुंजी" पाठकों को प्रेरित करता है। इसके अलावा "दर्पण से वार्तालाप", "मंजिल को पाने की चाह" आदि रचनाएं उच्च कोटि की है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

धन्यवाद।

नीलू सेठ
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, सैक

उपर्युक्त विषय पर आपके दिनांक 08.12.2020 का ई-मेल प्राप्त हुआ। लिंक के द्वारा हिंदी पत्रिका "गगन" का 51 वां अंक का डिजिटल संस्करण पढ़ लिया। पत्रिका में वैज्ञानिक आलेखों तथा केंद्र में आयोजित राजभाषा हिंदी एवं अन्य कार्यक्रमों का भी समावेश किया गया है। पत्रिका की सजावट, कलेवर व रूपरेखा अनुकरणीय है।

पत्रिका के सफल संपादन में सहयोग देनेवाले सभी कर्मियों को हार्दिक बधाईयां और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

डॉ. टी विजय शेखर
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, आईपीआरसी

वीएसएससी द्वारा दिनांक 08 दिसंबर, 2020 को प्रेषित वीएसएससी की हिंदी गृह पत्रिका "गगन" की डिजिटल प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका का संकलन एवं संपादन अत्यंत रोचक पूर्ण है एवं कवर पृष्ठ प्रकृति की अनमोल धरोहर एवं मानवीय संबंधों को दर्शाता है। पत्रिका के विषय वस्तु एवं जन सामान्य से सरोकार रखने वाले लेख एवं तकनीकी विषयों को रोचकपूर्ण तरीके प्रस्तुत किया गया है, जो अत्यंत सराहनीय है।

"गगन" के सफल प्रकाशन हेतु बधाई।

सधन्यवाद।

राम प्रकाश यादव
हिंदी अधिकारी, एलपीएससी

विजय आह्लाद

तैल चित्र (ऑयल पेंटिंग)
(चित्रकार: श्री टी सी राजन, वरि. परि. सहायक, केंद्रीय लेखा)

हिंदी अनुभाग, वीएसएससी द्वारा प्रकाशित;
मेसर्स ऑरेंज प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड, तिरुवनंतपुरम-1 द्वारा मुद्रित (0471 4010905)